128वां संस्करण

नवम्बर 2025

मन की बात

भारत का खेल गौरव परचम फहराती महिलाएँ

पहला दृष्टिबाधित महिला टी20 क्रिकेट विश्व कप, 2025

आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप, 2025

महिला कबड्डी विश्व कप, 2025

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

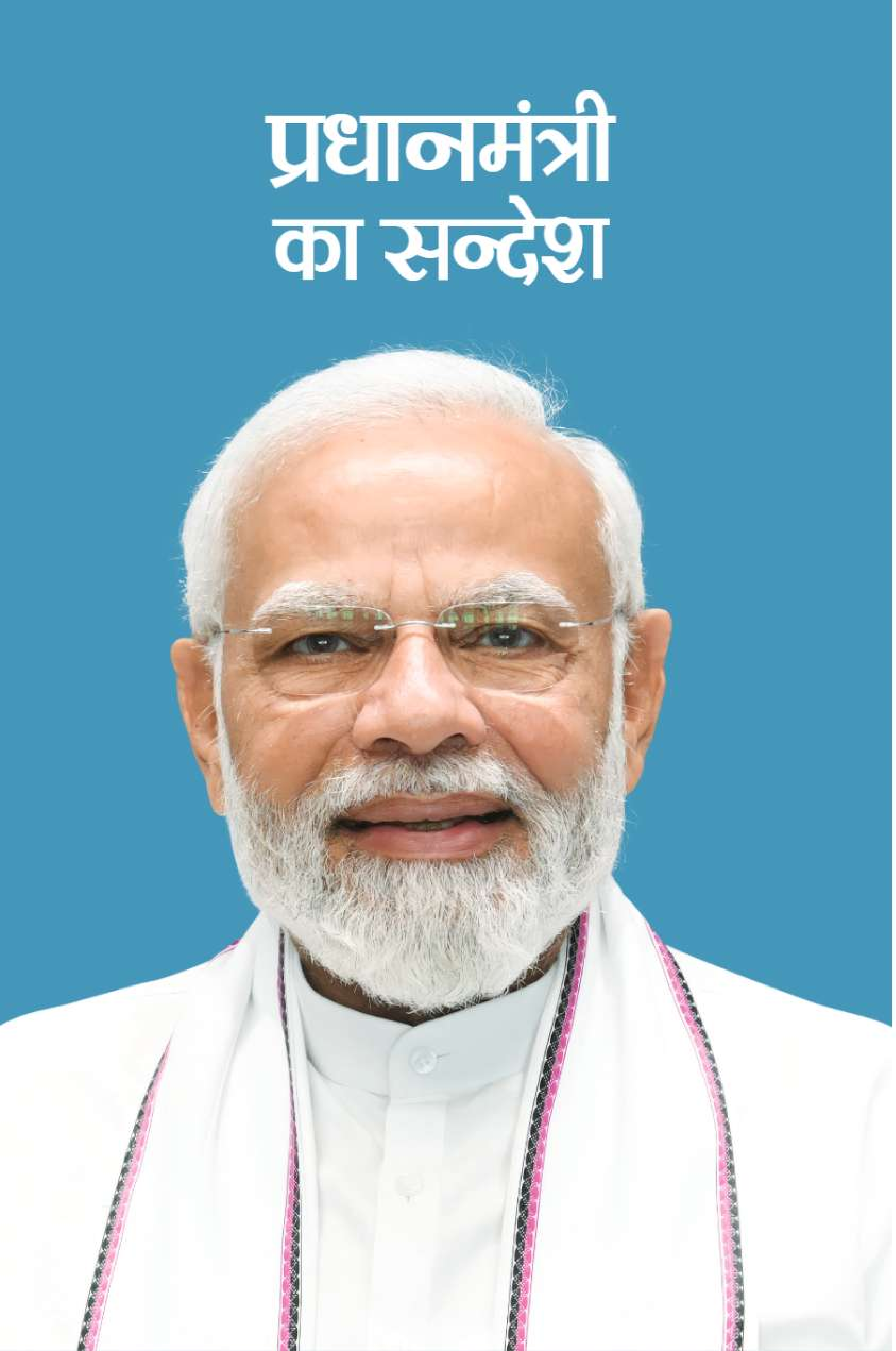

सूची क्रम

मुख्य आलेख

26 **मीठी क्रांति** : शहद उत्पादन में भारत का नया कीर्तिमान

46 **आईएनएस माहे** : भारतीय नौसेना की मजबूत स्वदेशी क्षमता का प्रतीक

54 **सर्दियों का वादा** : भारत में पर्यटन और एडवेंचर

58 **'वोकल फ़ॉर लोकल'** : भारतीय कला का वैश्विक प्रसार

संक्षेप में

30 **पहाड़ियों से लेकर जंगलों और चट्टानों तक** : भारत की अद्भुत शहद विरासत

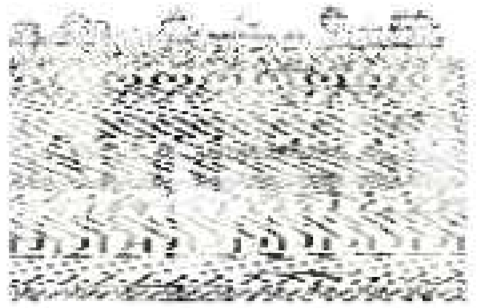

40 **जामसाहब महाराजा दिग्विजय सिंह जी** : द्वितीय विश्वयुद्ध की त्रासदी में भारतीय संवेदना की मशाल

66 **भारत में एंड्योरेंस स्पोर्ट्स का उदय** : आयरनमैन संस्कृति और युवा सहभागिता

लेख

22 **अंतरराष्ट्रीय उड्डयन के क्षेत्र में भारत की पहचान** – जे.एस. गव्हाणकर

32 **अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव** : गीता की विश्व यात्रा –नायब सिंह सैनी

36 महाभारत अनुभव केंद्र जहाँ जीवंत हुआ महाकाव्य – पार्थ गुप्ता

42 काशी–तमिल संगमम् और तमिल करकलम – चमू कृष्ण शास्त्री

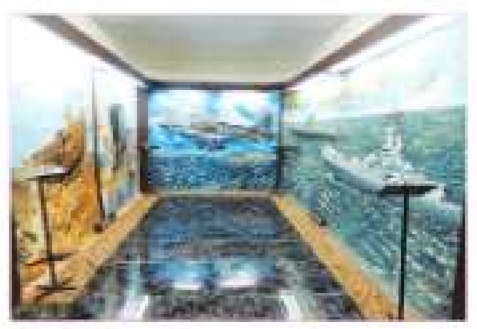

50 नौसेना संग्रहालयों के माध्यम से जानिए भारत की समुद्री शक्ति – एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी

62 भारतीय खेलों का स्वर्णिम माह प्रेरणादायक उपलब्धियाँ – मिताली राज

69 प्रतिक्रियाएँ

मेरे प्यारे देशवासियो नमस्कार

'मन की बात' में आपका एक बार फिर स्वागत है। नवम्बर का महीना बहुत सी प्रेरणाएँ लेकर आया, **कुछ दिन पहले ही 26 नवम्बर को 'संविधान दिवस' पर central hall में विशेष कार्यक्रम का आयोजन हुआ। वंदेमातरम् के 150 वर्ष होने पर पूरे देश में होने वाले कार्यक्रमों की शानदार शुरुआत हुई। 25 नवम्बर को अयोध्या में राम मंदिर पर धर्मध्वजा का आरोहण हुआ। इसी दिन कुरुक्षेत्र के ज्योतिसर में पांचजन्य स्मारक का लोकार्पण हुआ।**

साथियो, कुछ दिन पहले ही मैंने हैदराबाद में दुनिया की सबसे बड़ी लीप इंजन MRO facility का उद्घाटन किया है। **Aircrafts की Maintenance, repair and overhaul के sector में भारत ने ये बहुत बड़ा कदम उठाया**

है। पिछले हफ्ते मुंबई में एक कार्यक्रम के दौरान INS ‘माहे’ को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया। पिछले ही हफ्ते भारत के space ecosystem को Skyroot के Infinity campus ने नई उड़ान दी है। ये भारत की नई सोच, innovation और Youth Power का प्रतिबिम्ब बना है।

साथियो, कृषि क्षेत्र में भी देश ने बड़ी उपलब्धि हासिल की। **भारत ने 357 मिलियन टन के खाद्यान्न उत्पादन के साथ एक ऐतिहासिक record बनाया है। Three hundred and fifty seven million ton! 10 साल पहले की तुलना में भारत का खाद्यान्न उत्पादन 100 मिलियन टन और बढ़ गया है।** खेलों की दुनिया में भी भारत का परचम लहराया है। कुछ दिन पहले ही भारत को कॉमनवेल्थ खेलों की मेजबानी का भी ऐलान हुआ। ये उपलब्धियाँ देश की हैं, देशवासियों की हैं। और ‘मन की बात’ देश के लोगों की ऐसी उपलब्धियों को, लोगों के सामूहिक प्रयासों को जन-सामान्य के सामने लाने का, एक बेहतरीन मंच है।

साथियो, अगर मन में लगन हो, सामूहिक शक्ति पर टीम की तरह काम करने पर विश्वास हो, गिरकर फिर से

उठ खड़े होने का साहस हो, तो कठिन-से-कठिन काम में भी सफलता सुनिश्चित हो जाती है। आप उस दौर की कल्पना करिए, जब satellite नहीं थीं, GPS system नहीं था, navigation की कोई सुविधाएँ नहीं होती थीं। तब भी हमारे नाविक बड़े-बड़े जहाज लेकर समंदर में निकल जाते थे, और तय स्थानों पर पहुँचते थे। अब समंदर से आगे बढ़कर दुनिया के देश अंतरिक्ष की अनंत ऊंचाई को नाप रहे हैं। चुनौती वहाँ भी वही है, ना GPS system है, ना संचार की वैसी व्यवस्थाएँ हैं, फिर हम कैसे आगे बढ़ेंगे?

साथियो, कुछ दिनों पहले social media पर एक Video ने मेरा ध्यान खींचा। ये video ISRO की एक अनोखी drone प्रतियोगिता का था। इस Video में हमारे देश के युवा और खासकर हमारे Gen-Z मंगल ग्रह जैसी परिस्थितियों में drone उड़ाने की कोशिश कर रहे थे। drone उड़ते थे, कुछ पल संतुलन में रहते थे, फिर अचानक जमीन पर गिर पड़ते थे। जानते हैं क्यों? क्योंकि यहाँ जो drone उड़ रहे थे, उनमें GPS का सपोर्ट बिल्कुल नहीं था। मंगल ग्रह पर GPS संभव नहीं इसलिए drone को कोई बाहरी संकेत या guidance नहीं मिल सकता। drone को अपने कैमरे और Inbuilt software के सहारे उड़ना था। उस छोटे-से drone को जमीन के pattern पहचानने थे, ऊँचाई मापनी थी, बाधाएँ समझनी थी, और खुद ही सुरक्षित उतरने का रास्ता ढूँढना था। इसलिए drone भी एक के बाद एक गिरे जा रहे थे।

साथियो, इस प्रतियोगिता में, पुणे के युवाओं की एक टीम ने कुछ हद तक सफलता पाई। उनका drone भी कई

बार गिरा, crash हुआ पर उन्होंने हार नहीं मानी। कई बार के प्रयास के बाद इस team का drone मंगल ग्रह की परिस्थिति में कुछ देर उड़ने में कामयाब रहा।

साथियो, ये Video देखते हुए, मेरे मन में एक और दृश्य उभर आया। वो दिन जब चंद्रयान-2 सम्पर्क से बाहर हो गया था। उस दिन पूरा देश, और खासकर वैज्ञानिक कुछ पल के लिए निराश हुए थे। लेकिन साथियो, असफलता ने उन्हें रोका नहीं। उसी दिन उन्होंने चंद्रयान-3 की सफलता की कहानी लिखनी शुरू कर दी। यही कारण है कि जब चंद्रयान-3 ने सफल landing की, तो वो सिर्फ एक mission की सफलता नहीं थी। वो तो असफलता से निकल कर बनाए गए विश्वास की सफलता थी। इस Video में जो युवा दिख रहे हैं, उनकी आँखों में मुझे वही चमक दिखाई दी। हर बार जब मैं हमारे युवाओं की लगन और वैज्ञानिकों के समर्पण को देखता हूँ, तो मन उत्साह से भर जाता है। युवाओं की यही लगन, विकसित भारत की बहुत बड़ी शक्ति है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आप सभी शहद की मिठास से ज़रूर परिचित होंगे, लेकिन, अक्सर हमें ये नहीं पता चलता इसके पीछे कितने लोगों की मेहनत है, कितनी परम्पराएँ हैं, और प्रकृति के साथ कितना सुंदर तालमेल है।

साथियो, जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी इलाकों में वन तुलसी यानी सुलाई, सुलाई के फूलों से यहाँ की मधुमक्खियाँ बेहद अनोखा शहद बनाती हैं। ये सफेद रंग का शहद होता है जिसे रामबन सुलाई honey कहा जाता है। कुछ वर्षों पहले ही रामबन सुलाई honey को GI Tag मिला है। इसके बाद इस शहद की पहचान पूरे देश में बन रही है।

साथियो, दक्षिण कन्नड़ा जिले के पुत्तुर में वहाँ की वनस्पतियाँ शहद उत्पादन के लिए उत्कृष्ट मानी जाती हैं। यहाँ 'ग्रामजन्य' नाम की किसान संस्था इस प्राकृतिक उपहार को नई दिशा दे रही है। 'ग्रामजन्य' ने यहाँ एक आधुनिक processing unit बनाया, lab, bottling, storage और digital tracking जैसी सुविधाएँ जोड़ी गईं। अब यही शहद branded उत्पाद बनकर गाँवों से शहरों तक पहुँच रहा है। इस प्रयास

का लाभ ढाई हज़ार से अधिक किसानों को मिला है।

साथियो, कर्नाटका के ही तुमकुरु ज़िले में 'शिवगंगा कालंजिया' नाम की संस्था का प्रयास भी बहुत सराहनीय है। इनके द्वारा यहाँ हर सदस्य को शुरुआत में दो bee-boxes दिए जाते हैं। ऐसा करके इस संस्था ने अनेकों किसानों को अपने अभियान से जोड़ दिया है। अब इस संस्था से जुड़े किसान मिलकर शहद निकालते हैं, बेहतरीन packaging करते हैं और स्थानीय बाज़ार तक पहुँचाते हैं। इससे उन्हें लाखों की कमाई भी हो रही है। ऐसा ही एक उदाहरण नागालैंड के cliff-honey hunting का है। नागालैंड के चोकलांगन गाँव में खियामनि-याँगन जनजाति सदियों से शहद निकालने का काम करती आई हैं। यहाँ मधुमक्खियाँ पेड़ों पर नहीं बल्कि ऊँची चट्टानों पर अपने घर बनाती हैं। इसलिए शहद निकालने का काम भी बहुत जोखिम भरा होता है।

इसलिए यहाँ के लोग मधुमक्खियों से पहले सौम्यता से बात करते हैं, उनसे अनुमति लेते हैं। उन्हें बताते हैं कि आज वे शहद लेने आए हैं, इसके बाद शहद निकालते हैं।

साथियो, आज भारत honey production में नए रिकार्ड बना रहा है। 11 साल पहले देश में honey का उत्पादन 76 हज़ार मीट्रिक टन था। अब ये बढ़कर डेढ़ लाख मीट्रिक टन से भी .ज्यादा हो गया है। बीते कुछ वर्षों में शहद का export भी तीन गुना से ज़्यादा बढ़ गया है। **Honey Mission कार्यक्रम के तहत खादी ग्रामोद्योग ने भी सवा 2 लाख से .ज्यादा bee-boxes लोगों में बांटे हैं।** इससे हज़ारों लोगों को रोज़गार के नए अवसर मिले हैं। यानी देश के अलग-अलग कोनों में शहद की मिठास भी बढ़ रही है। और ये मिठास किसानों की आय भी बढ़ा रही है।

मेरे प्यारे देशवासियो, हरियाणा के कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था, ये हम सभी जानते हैं। लेकिन युद्ध के इस अनुभव को अब आप वहाँ महाभारत अनुभव केंद्र में भी साक्षात महसूस कर सकते हैं। इस अनुभव केंद्र में महाभारत की गाथा को 3D, Light & Sound Show और digital technique से दिखाया जा रहा है। 25 नवम्बर को जब मैं कुरुक्षेत्र गया था तो इस अनुभव केंद्र के अनुभव ने मुझे आनंद से भर दिया था।

साथियो, कुरुक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में शामिल होना भी मेरे लिए बहुत विशेष रहा। मैं ये देखकर बहुत

प्रभावित हुआ कि कैसे दुनिया भर के लोग दिव्य ग्रंथ गीता से प्रेरित हो रहे हैं। इस महोत्सव में यूरोप और सेंट्रल एशिया सहित विश्व के कई देशों के लोगों की भागीदारी रही है।

इस महीने की शुरुआत में सऊदी अरब में पहली बार किसी सार्वजनिक मंच पर गीता की प्रस्तुति की गई है। यूरोप के लातविया में भी एक यादगार गीता महोत्सव आयोजित किया गया। इस महोत्सव में लातविया, एस्टोनिया, लिथुआनिया और अल्जीरिया के कलाकारों ने बढ़-चढ़ करके हिस्सा लिया।

साथियो, भारत की महान संस्कृति में शांति और करुणा का भाव सर्वोपरि रहा है। आप दूसरे विश्व युद्ध की कल्पना कीजिए, जब चारों ओर विनाश का भयावह माहौल बना हुआ था। ऐसे मुश्किल समय में गुजरात के नवानगर के जामसाहब, महाराजा दिग्विजय सिंह जी ने जो महान कार्य किया, वो आज भी हमें प्रेरणा देता है। उस समय जामसाहब, किसी सामरिक गठबंधन या युद्ध की रणनीति को लेकर नहीं सोच रहे थे। बल्कि **उनकी चिंता ये थी कि कैसे विश्व युद्ध के बीच पोलिश यहूदी बच्चों की रक्षा हुई। उन्होंने गुजरात में तब हज़ारों बच्चों को शरण देकर उन्हें नया जीवन दिया, जो आज भी एक मिसाल है। कुछ दिन पहले दक्षिणी इज़राइल के मोशाव नेवातिम में जाम साहब की प्रतिमा का अनावरण किया गया। यह बहुत ही विशेष सम्मान था।** पिछले वर्ष पोलैंड के वारसॉ में मुझे जाम साहब के स्मारक पर श्रद्धासुमन अर्पित करने का सौभाग्य मिला था। मेरे लिए वो क्षण अविस्मरणीय रहेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिनों पहले मैं Natural Farming के एक विशाल सम्मेलन में हिस्सा लेने कोयम्बटूर गया था। दक्षिण भारत में Natural Farming को लेकर हो रहे प्रयासों को देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ। कितने ही युवा

Highly Qualified Professional अब Natural Farming Field को अपना रहे हैं। मैंने वहाँ किसानों से बात की, उनसे अनुभव जाने। **Natural Farming भारत की प्राचीन परम्पराओं का हिस्सा रही है और हम सभी का कर्तव्य है कि धरती माँ की रक्षा के लिए इसे निरंतर बढ़ावा दें।**

साथियो, विश्व की सबसे पुरानी भाषा और विश्व के सबसे प्राचीन शहरों में से एक शहर, इन दोनो का संगम हमेशा अद्भुत होता है। मैं बात कर रहा हूँ – 'काशी-तमिल संगमम' की। 2 दिसम्बर से काशी के नमो घाट पर चौथा काशी-तमिल संगमम शुरू हो रहा है। इस बार के काशी-तमिल संगमम की थीम बहुत ही रोचक है – Learn Tamil – तमिल करकलम्। काशी-तमिल संगमम उन सभी लोगों के लिए एक महत्त्वपूर्ण मंच बन गया है जिन्हें तमिल भाषा से लगाव है। **काशी के लोगों से जब भी बात होती है तो वो हमेशा बताते हैं कि काशी-तमिल संगमम का हिस्सा बनना उन्हें बहुत अच्छा लगता है।** यहाँ उन्हें कुछ नया सीखने और नए-नए लोगों से मिलने का अवसर मिलता है। इस बार भी काशीवासी पूरे जोश और उत्साह के साथ तमिलनाडु से आने वाले

अपने भाई-बहनों का स्वागत करने के लिए बहुत उत्सुक हैं। **मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप काशी-तमिल संगमम का हिस्सा जरूर बनें।** इसके साथ ही ऐसे और भी मंचों के बारे में सोचें, जिनसे 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना मज़बूत हो। यहाँ मैं एक बार फिर कहना चाहूँगाः

तमिल कलाच्चारम उयर्वानद्
तमिल मोलि उयर्वानद्
तमिल इन्दियाविन पेरुमिदम्।
(हिन्दी अनुवाद)
तमिल संस्कृति महान है।
तमिल भाषा महान है।
तमिल भारत का गौरव है।

मेरे प्यारे देशवासियो, **जब भारत के सुरक्षा तंत्र को मज़बूती मिलती है, तो हर भारतीय को गर्व होता है। पिछले हफ्ते मुंबई में INS 'माहे' को भारतीय नौसेना में शामिल किया गया।** कुछ

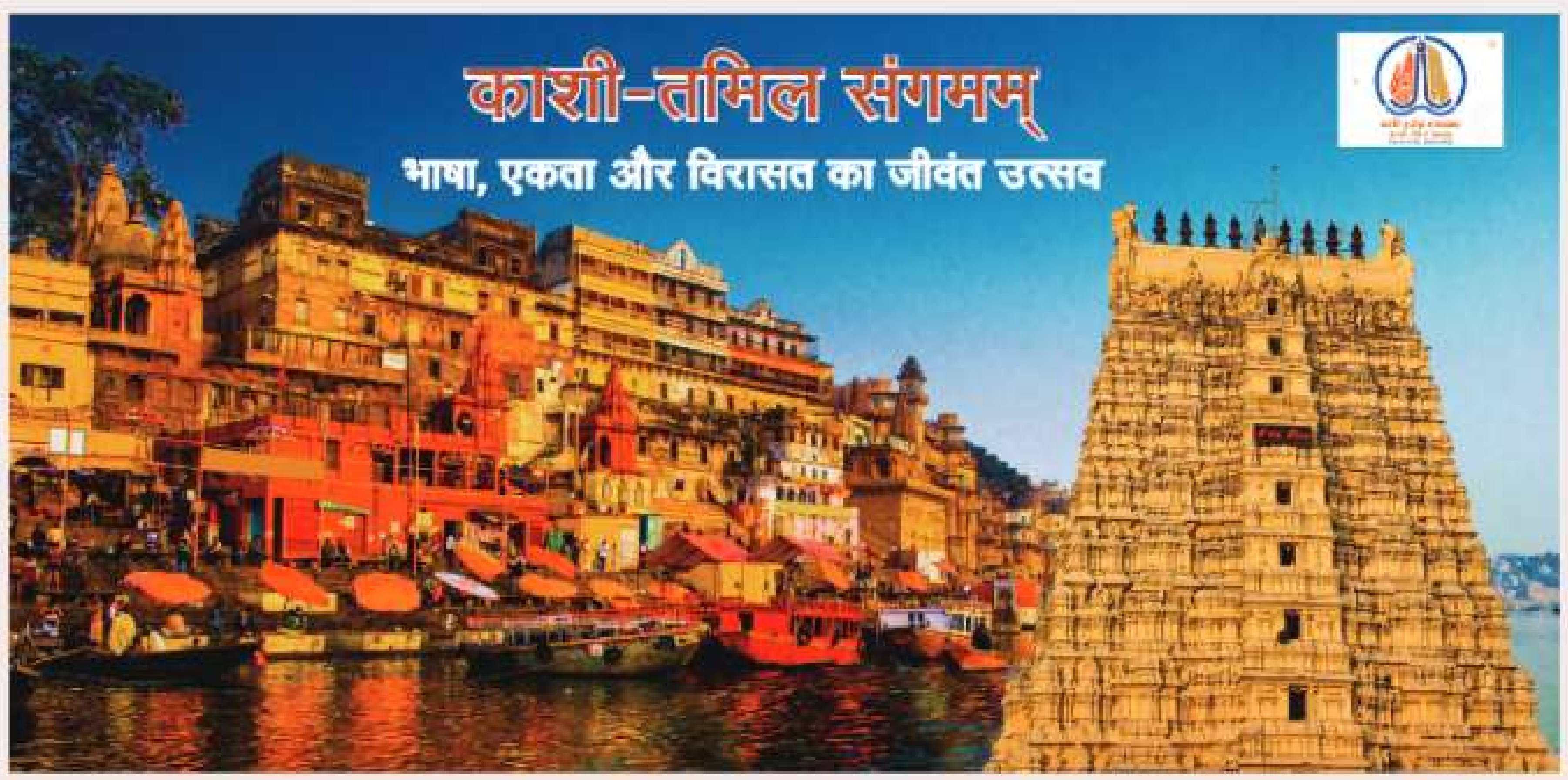

लोगों के बीच इसके स्वदेशी design को लेकर खूब चर्चा रही। वहीं, पुडुचेरी और मालाबार coast के लोग इसके नाम से ही खुश हो गए। दरअसल, इसका 'माहे' नाम उस स्थान माहे के नाम पर रखा गया है, जिसकी एक समृद्ध ऐतिहासिक विरासत रही है। केरला और तमिलनाडु के कई लोगों ने इस बात पर गौर किया कि इस युद्धपोत का crest उरुमी और कलारिपयट्टू की पारम्परिक लचीली तलवार की तरह दिखाई पड़ता है। **ये हम सबके लिए गर्व की बात है कि हमारी नौसेना बहुत ही तेज़ी से आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही है। 4 दिसम्बर को हम नौसेना दिवस भी मनाने जा रहे हैं। ये अवसर हमारे सैनिकों के अदम्य साहस और पराक्रम को सम्मान देने का एक खास दिन है।**

साथियो, **जो लोग Navy से जुड़े tourism में रुचि रखते हैं, उनके लिए हमारे देश में बहुत-सी जगह हैं, जहाँ जाकर उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।** देश के पश्चिमी तट पर गुजरात के सोमनाथ के पास एक ज़िला है-दीव। दीव में 'INS खुखरी' को समर्पित **'Khukhri Memorial and Museum'** है। वहीं, Goa में **'naval aviation museum'** है, जो Asia में अपनी तरह का अनूठा संग्रहालय है। Fort Kochi के INS द्रोणाचार्य में **'Indian Naval Maritime Museum'** है। यहाँ हमारे देश की Maritime history और Indian Navy के evolution को देखा जा सकता है। श्रीविजयापुरम जिसे पहले Port Blair कहा जाता था, वहाँ **'समुद्रिका- Naval Marine Museum'** उस क्षेत्र के समृद्ध इतिहास को सामने लाने के लिए जाना जाता है। कारवार के रवीन्द्रनाथ टैगोर beach पर **Warship Museum** में मिसाइलों और हथियारों की replica रखी गई हैं। **विशाखापत्तनम में भी एक submarine, helicopter और aircraft museum है, जो Indian Navy से जुड़ा है। मैं आप सभी से, विशेषकर military history में रुचि रखने वाले लोगों से आग्रह करता हूँ कि आप इन museums को देखने ज़रूर जाएँ।**

मेरे प्यारे देशवासियो, **सर्दियाँ आ**

गई हैं और साथ ही सर्दियों से जुड़े **Tourism का भी समय आ गया है।** दुनिया के कई देशों ने सर्दियों में होने वाले Tourism को, Winter Tourism को अपनी अर्थव्यवस्था का बहुत बड़ा आधार बना दिया है। अनेक देशों में दुनिया के सबसे सफल Winter Festival और Winter Sports model हैं। इन देशों ने Skiing, Snow-boarding, Snow Trekking, Ice Climbing और Family Snow Parks जैसे अनुभवों को अपनी पहचान बनाया है। इन्होंने अपने winter festivals को भी वैश्विक आकर्षण में बदला है।

साथियो, हमारे देश में भी **winter tourism की हर क्षमता मौजूद है। हमारे पास पहाड़ भी हैं, संस्कृति भी है और adventure की असीम संभावनाएँ भी हैं। मुझे खुशी है। इन दिनों उत्तराखंड का winter tourism लोगों को बहुत आकर्षित कर रहा है। सर्दियों के मौसम में औली, मुनस्यारी, चोपटा और डेयारा जैसी जगहें खूब popular हो रही हैं। अभी कुछ सप्ताह पहले पिथौरागढ़ ज़िले में साढ़े चौदह हज़ार फुट से अधिक की ऊँचाई पर आदि कैलाश में राज्य की पहली High Altitude Ultra Run Marathon का आयोजन किया गया था। इसमें देश भर के 18 राज्यों से 750 से .ज्यादा athletes ने हिस्सा लिया था।** 60 किलोमीटर लम्बी 'आदि कैलाश परिक्रमा रन' का प्रारम्भ कड़कड़ाती सर्दी में सुबह पाँच बजे हुआ था। इतनी ठंड के बावजूद भी लोगों का उत्साह देखते ही बनता था। **आदि कैलाश की यात्रा पर, जहाँ तीन साल पहले तक मात्र दो हज़ार से कम पर्यटक आते थे, अब यह संख्या भी बढ़कर तीस हजार से अधिक हो गई है।**

साथियो, कुछ ही हफ्तों में उत्तराखंड में Winter Games का आयोजन भी होना है। देशभर के खिलाड़ी, adventure प्रेमी और खेलों से जुड़े लोग इस आयोजन को लेकर उत्साहित हैं। **Skiing हो या Snow-boarding, बर्फ पर होने वाले कई खेलों की तैयारियाँ शुरू हो चुकी हैं। उत्तराखंड ने winter tourism को बढ़ाने के लिए connectivity और infrastructure पर भी focus किया है। Homestay को लेकर नई policy भी बनाई गई है।**

साथियो, **सर्दियों में Wed in India अभियान की भी अलग धूम होती है।** सर्दियों की सुनहरी धूप हो, पहाड़ से उतरते कोहरे की चादर हो, Destination Wedding के लिए पहाड़ भी अब खूब popular हो रहे हैं। कई शादियाँ तो अब खासतौर पर गंगा जी के किनारे हो रही हैं।

साथियो, सर्दियों के इन दिनों में हिमालय की वादियाँ एक ऐसे अनुभव का हिस्सा बन जाती हैं, जो जीवन भर साथ रहता है। अगर आप इस सर्दी में कहीं जाने का विचार कर रहे हैं तो हिमालय की वादियों का विकल्प ज़रूर रखिएगा।

साथियो, कुछ हफ्ते पहले मैं भूटान गया था। ऐसे दौरों में अलग-अलग प्रकार के संवाद और चर्चाओं का अवसर मिलता है। अपनी इस यात्रा में मैंने भूटान के राजा, वर्तमान राजा के पिताजी जो खुद भी पहले राजा रह चुके हैं, वहाँ के प्रधानमंत्री और अन्य लोगों से मुलाकातें की। इस दौरान हर किसी से एक बात ज़रूर सुनने को मिली। सभी लोग वहाँ Buddhist relics यानी भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेष भेजे जाने को लेकर भारतवासियों का आभार जता रहे थे। मैंने जब भी यह सुना, तो मेरा हृदय गर्व से भर उठा।

साथियो, **भगवान बुद्ध के पावन अवशेषों को लेकर कई अन्य देशों में भी ऐसा ही उत्साह देखने को मिला है। पिछले महीने ही National Museum से इन पवित्र अवशेषों को रूस के कलमीकिया ले जाया गया था। यहाँ बौद्ध धर्म का विशेष महत्त्व है।** मुझे बताया गया कि इनके दर्शन के लिए रूस के दूरदराज से भी बहुत बड़ी संख्या में

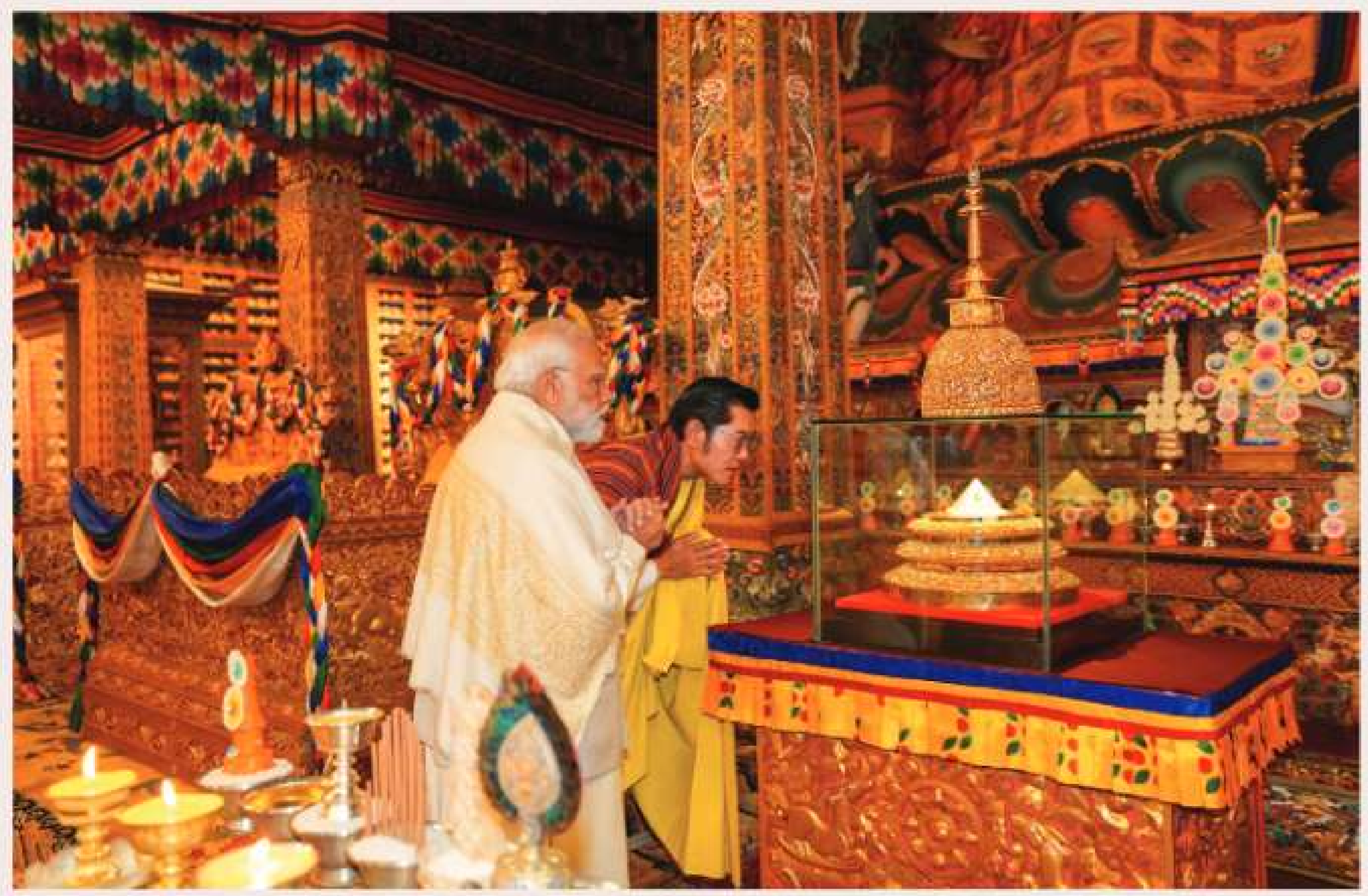

लोग वहाँ पहुँचे। **इन पवित्र अवशेषों को मंगोलिया, वियतनाम और थाइलैंड भी ले जाया जा चुका है। हर जगह लोगों का भारी उत्साह देखने को मिला है।** इनके दर्शन के लिए थाइलैंड के राजा भी पहुँचे थे। पूरे विश्व में भगवान बुद्ध के पवित्र अवशेषों के प्रति इस प्रकार का गहरा जुड़ाव देखकर मन भावविभोर हो उठता है। यह सुनकर बहुत अच्छा लगता है कि कैसे इस तरह की कोई पहल दुनियाभर के लोगों को आपस में जोड़ने का माध्यम बन जाती है।

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं आप सभी से हमेशा 'vocal for local' के मंत्र को साथ लेकर चलने की बात करता हूँ। अभी कुछ दिनों पहले G-20 शिखर सम्मेलन के दौरान जब विश्व के कई नेताओं को उपहार देने की बात आई, तो मैंने फिर कहा - 'vocal for local'। मैंने देशवासियों की ओर से विश्व के नेताओं को जो उपहार भेंट किए, उसमें इस भावना का विशेष ध्यान रखा गया। G-20 के दौरान, मैंने दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति को नटराज की कांस्य प्रतिमा भेंट की। ये तमिलनाडु के तंजावुर की सांस्कृतिक विरासत से जुड़ी चोल-कालीन शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण है। कनाडा के प्रधानमंत्री को चाँदी के अश्व की प्रतिकृति दी गई। यह राजस्थान के उदयपुर की बेहतरीन शिल्पकला को दर्शाती है। जापान के प्रधानमंत्री को चाँदी की बुद्ध की प्रतिकृति भेंट की गई। इसमें तेलंगाना और करीमनगर की प्रसिद्ध Silver Craft की बारीकी का पता चलता है। इटली की प्रधानमंत्री को फूलों की आकृतियों वाला silver mirror उपहार में दिया। ये भी करीमनगर की ही पारम्परिक धातु शिल्पकला को प्रदर्शित करता है। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री को मैंने Brass उरली भेंट की, ये केरला के मन्नार का एक उत्कृष्ट शिल्प है। मेरा उद्देश्य था कि दुनिया भारतीय शिल्प, कला और परम्परा के बारे में जाने और हमारे कारीगरों की प्रतिभा को Global मंच मिले।

साथियो, मुझे खुशी है कि 'vocal for local' की भावना को देश के करोड़ों लोगों ने अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। इस साल जब आप त्योहारों की खरीदारी के लिए बाज़ार में गए होंगे, तो एक बात आप सभी ने महसूस की होगी। लोगों की पसंद, और घरों में आने वाले सामानों में एक साफ संकेत दिखाई दे रहा था कि देश स्वदेशी की ओर लौट रहा है। लोग अपने मन से भारतीय उत्पादों को चुन रहे थे। इस बदलाव को छोटे से छोटे दुकानदार ने भी महसूस किया। इस बार युवाओं ने भी 'vocal for local' अभियान को गति दी। **आने वाले कुछ दिन में Christmas और नए वर्ष पर खरीदारी का नया दौर शुरू होने वाला है। मैं आपको फिर याद दिलाऊँगा, 'vocal for local' का मंत्र याद रखें, खरीदे वही जो देश में बना हो, बेचें वही जिसमें किसी देशवासी की मेहनत लगी हो।**

मेरे प्यारे देशवासियो, भारतीय खेलों के लिहाज से ये महीना super hit रहा है। **इस महीने की शुरुआत भारतीय महिला टीम द्वारा आईसीसी महिला विश्व कप जीतने से हुई।** लेकिन उसके बाद भी मैदान पर और ज़्यादा action देखने को मिला है। **कुछ दिन पहले ही Tokyo में Deaf-Olympics हुए हैं, जहाँ भारत ने अपना अब-तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 20 medals जीते हैं। हमारी महिला खिलाड़ियों ने भी कबड्डी वर्ल्ड कप जीतकर इतिहास ही रच दिया।** पूरे tournament में उन्होंने बेहतरीन प्रदर्शन करके, हर भारतवासी का मन जीत लिया। **World Boxing Cup Finals में भी हमारे खिलाड़ियों का प्रदर्शन शानदार रहा, जहाँ उन्होंने 20 medals जीते।**

साथियो, जिस बात की और भी अधिक चर्चा हो रही है, वो है **हमारी महिला टीम का Blind Cricket World Cup जीतना।** बड़ी बात यह है कि हमारी इस टीम ने बिना एक भी मैच हारे, इस tournament को जीता है। देशवासियो को इस टीम के हर खिलाड़ी पर बहुत गर्व है। मेरी इस टीम से प्रधानमंत्री निवास पर मुलाकात हुई। वाकई इस टीम का हौसला, उनका जज़्बा हमें बहुत कुछ सिखाता है। **यह विजय हमारे खेल इतिहास की सबसे बड़ी जीतों में से एक है, जो हर भारतीय को प्रेरित करती रहेगी।**

साथियो, आजकल हमारे देश में Endurance Sports की एक नई खेल संस्कृति भी तेज़ी से उभर रही है। Endurance Sports से मेरा मतलब, ऐसी sports activities से है, जिनमें आपकी limits की परख होती है। कुछ साल पहले तक Marathon और Bikethon जैसे खास event कुछ विशेष लोगों तक ही सीमित थे। लेकिन अब बहुत कुछ बदल चुका है। मुझे बताया गया है कि देशभर में हर महीने 1500 से ज़्यादा Endurance Sports का आयोजन होता है। इन events में हिस्सा लेने के लिए athletes दूर-दूर तक जाते हैं।

साथियो, Endurance Sports का ही एक उदाहरण है – Ironman Triathlon आप कल्पना करिए, यदि आपको यह बताया जाए कि आपके पास एक दिन से भी कम समय है और आपको ये तीन काम करने हैं: समंदर में 4 किलोमीटर तक तैरना, 180 किलोमीटर साइकिल चलाना और करीब 42 किलोमीटर की marathon दौड़ लगाना। तो आप सोचेंगे कि ये कैसे सम्भव है। लेकिन फौलादी हौसले वाले लोग इस काम को भी सफलतापूर्वक कर ले जाते हैं। इसलिए इसे Ironman Triathlon कहा जाता है।

गोवा में हाल ही में ऐसा ही एक आयोजन किया गया। आजकल इस तरह के आयोजनों में भी लोग बढ़-चढ़कर भागीदारी कर रहे हैं। ऐसी कई और प्रतियोगिताएँ भी हैं, जो हमारे युवा साथियों के बीच बहुत लोकप्रिय हो रही हैं। आजकल कई लोग Fit India Sundays on Cycle जैसे कार्यक्रमों में हिस्सा लेने के लिए साथ आ रहे हैं। ये सब ऐसी चीजें हैं, जिनसे fitness को बढ़ावा मिल रहा है।

साथियो, आपसे हर महीने मिलना मेरे लिए हमेशा एक नया अनुभव होता है। आपकी गाथाएँ, आपके प्रयास, मुझे नए सिरे से प्रेरित करते हैं। अपने संदेशों में आप जो सुझाव भेजते हैं, जो अनुभव साझा करते हैं, उससे हमें इस कार्यक्रम में भारत की विविधता को समेट लेने की प्रेरणा मिलती है। जब हम अगले महीने मिलेंगे तब 2025 खत्म होने वाला होगा। देश के ज़्यादातर हिस्सों में अब ठंड भी तेज होती जाएगी। सर्दियों के मौसम में आप अपना और अपने परिवार का विशेष ध्यान रखें। अगले महीने हम कुछ नए विषयों, नए व्यक्तित्वों की चर्चा ज़रूर करेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

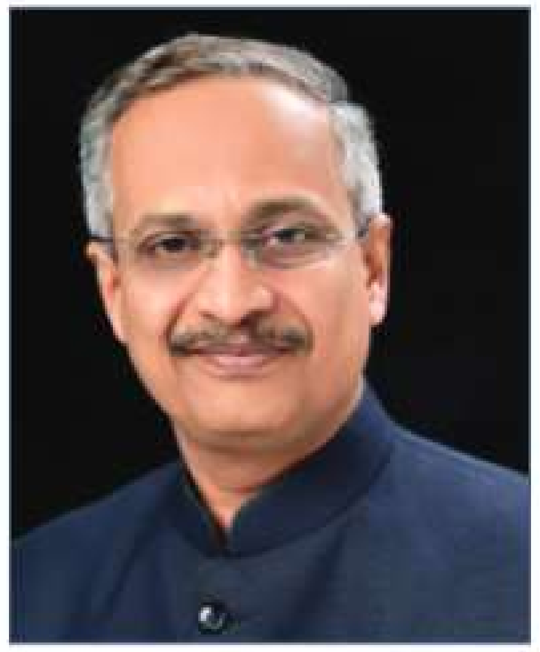

जे.एस. गव्हाणकर
सीईओ और कंट्री हेड
साफ्रान इंडिया

अंतरराष्ट्रीय उड्डयन के क्षेत्र में भारत की पहचान

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 26 नवम्बर, 2025 को वर्चुअल माध्यम से सैफरान एयरक्राफ्ट इंजन के डेडिकेटेड (समर्पित) मेंटेनेंस, रिपेयर एंड ओवरहॉल (MRO) सेंटर का उद्घाटन किया। जीएफएम लीप इंजन का यह केंद्र जीएमआर एयरोस्पेस एंड इंडस्ट्रियल पार्क में है जहाँ सैफरान इंजन रोटेटिंग पार्ट्स और इंजन एंड एयरक्राफ्ट इलेक्ट्रिकल वायरिंग बनाने वाली दो उत्पादन सुविधाएँ पहले से ही काम कर रही हैं। यह सुविधा सैफरान की। दुनियाभर में सबसे बड़ी लीप इंजन एमआरओ शॉप है, यह पहला मौका था जब ग्लोबल इंजन ओईएम या निजी क्षेत्र की किसी कम्पनी ने भारत में डीप-लेवल इंजन सर्विसिंग ऑपरेशन की सुविधा स्थापित की। यह सुविधा 44,000 वर्गमीटर में फैली है और इस पर 2000 करोड़ रुपये की लागत आई है।

भारत के नागरिक उड्डयन इकोसिस्टम के लिए यह बड़ी उपलब्धि है क्योंकि भारत विश्व के सबसे तेजी से बढ़ते नागरिक उड्डयन बाजारों में से है जिसमें LEAP द्वारा संचालित तंग बॉडी के इंजनों (A320neo और 737MAX फैमिली के) वाले विमानों के विशाल तथा लगातार बढ़ते बेड़े के लिए एयरपोर्ट नेटवर्क का भी बराबर विस्तार किया जा रहा है। भारत सीएफएम का तीसरा सबसे बड़ा बाजार है, भारत के पाँच यात्री विमान सेवा में हैं जो 400 से अधिक लीप-चालित विमान और 2000 इंजन ऑर्डर के अनुसार चला रहा है। स्थानीय स्तर पर फुल सर्विस लीप एम.आर.ओ. बन जाने से डीप-लेवल इंजन कार्य के लिए विदेशी सुविधाओं पर निर्भरता कम हो जाती है, कम समय लगता है, विदेशी मुद्रा बचती है और भारतीय विमानों के लिए बेड़ों की उपलब्धता बेहतर होती है। इससे पता चलता है कि सैफरान एयरक्राफ्ट इंजन सुविधा किस प्रकार भारत सरकार के उड्डयन इकोसिस्टम में **'आत्मनिर्भरता'** प्राप्त करने के लक्ष्य में सहायक बन सकती है।

हैदराबाद की LEAP MRO एमआरओ सुविधा इसलिए अनूठी है कि यह सैफरान की सबसे बड़ी LEAP MRO सुविधा है। हैदराबाद MRO कॉम्पलेक्स एक वर्ष में 300 LEAP इंजन सम्भाल सकता है और यहाँ **'एक ही स्थान में'** सभी सेवाएँ उपलब्ध रहती हैं, इसी कारण से यह दुनिया की सबसे बड़ी अकेली LEAP साइट मानी जाती है। इस सुविधा में हाई-बे इंजन शॉप्स, आधुनिकतम मशीनें, अगली पीढ़ी के इंजन टेस्ट सैल, ग्लोबल मानक वाली इंस्पेक्शन लाइनें तथा काम का सुरक्षित और आधुनिक परिवेश उपलब्ध है और MRO ऑपरेशन्स में समर्थन के लिए स्पेशलाइज़्ड यूनिटें भी हैं। इस सुविधा से सैफरान आगामी 2 वर्षों में नई M88 मिलिटरी इंजन शॉप भी शामिल करने की स्थिति में आ जाएगा जिससे **'एक ही MRO कैम्पस'** में नागरिक-और-सैनिक सेवाएँ उपलब्ध होने लगेंगी जो अनूठी विशेषता होगी। इतने बड़े पैमाने पर समन्वयन तथा सैफरान के गुणवत्ता और तकनीकी मानदंडों के तालमेल से यह अपनी किस्म की सबसे बड़ी सुविधा तो बनेगी ही, साथ ही टेक्नॉलॉजी की दृष्टि से भी सर्वाधिक उन्नत MRO सुविधाओं की श्रेणी में शामिल हो जाएगी।

रोज़गार, कुशलता और सप्लाई-चेन के संयुक्त प्रभाव से और अधिक उच्च गुणवत्ता वाले रोज़गार और प्रशिक्षण के अवसर विकसित हो सकेंगे। इससे यहाँ 1,100 से ज़्यादा कुशल तकनीशियनों और इंजीनियरों को सीधे काम मिलेगा जबकि पहले चरण के तहत विशेषज्ञ स्टॉफ और प्रशिक्षकों की नियुक्ति शुरू हो चुकी है। सीधे रोज़गार देने की इस व्यवस्था के साथ ही इस MRO संयंत्र से समूचे तेलंगाना में और भारत के व्यापक एयरोस्पेस सप्लाई चेन में करीब 6,000 अप्रत्यक्ष रोज़गार भी उपलब्ध हो सकेंगे। इससे MSMEs के लिए रोटेटिंग पार्ट्स, टेस्ट स्टैंड और रिपेयर फिक्सचर बनाने वाले सप्लायरों के लिए तेजी से अवसर उपलब्ध होने लगेंगे। स्थानीय फर्मों के साथ पहले से घोषित भागीदारी हो जाने पर सप्लाई-चेन का तुरंत विस्तार होगा तथा सैकड़ों नई नौकरियों की सम्भावना बन जाएगी जैसा कि TASL और सैफरान कम्पोनेंट फैसिलिटी, हैदराबाद के बीच भागीदारी से हुआ है।

विनिर्माण और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा देकर LEAP इंजन उन्नत सामग्री (कम्पोज़िट फैन ब्लेड, सिंगल क्रिस्टल टर्बाईन ब्लेड, थर्मल बैरियर कोटिंग) इस्तेमाल करते हैं और उन्हें प्रीसिजन मशीनिंग और एडिटिव या रिपेयर प्रोसेस की ज़रूरत पड़ती है। MRO प्लस एडजेसेंट कम्पोनेंट फैक्टरियाँ भारतीय वर्कशॉप्स के लिए उन्नत विनिर्माण तकनीक हस्तांतरित करने का इकोसिस्टम तैयार करती हैं जिससे समूचे क्षेत्र में तकनीक मानकों में सुधार आ जाता है। सिविल और मिलिटरी इंजन एक ही जगह होने से कुशलता और विनिर्माण के क्रॉस-फर्टिलाइज़ेशन को प्रोत्साहन मिलेगा जिससे हायर

टेक्नॉलॉजी एयरोस्पेस कम्पोनेंट्स के डिजाइन बनाने और उनके परीक्षण और प्रमाणन की प्रक्रिया तेज़ की जा सकेगी।

आत्मनिर्भरता की दिशा में एक सफल कदम यह है कि सैफरान मॉडल में टेक्नॉलॉजी ट्रांसफर (हस्तांतरण), स्थानीय विनिर्माण सम्पर्कों तथा कार्यबल की ट्रेनिंग को आत्मनिर्भरता के तीन ठोस स्तम्भ माना जाता है। भारत में ही हाई-वैल्यू रिपेयर्स और ओवरहॉलिंग करने से तथा लीप मॉड्यूल्स के लिए स्थानीय उपकरण (कम्पोनेंट) उत्पादन की व्यवस्था करने से परियोजना की विदेशों पर निर्भरता कम की जा सकती है।

इस सुविधा के उद्घाटन के साथ ही सैफरान एयरक्राफ्ट इंजंस ने एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं जिसके तहत गति शक्ति यूनिवर्सिटी उद्योगों के अनुसार पाठ्यक्रम तैयार करेगी और विद्यार्थियों को LEAP MRO टेक्नॉलॉजी की ट्रेनिंग भी देगी। इनकी तेलंगाना स्टेट एविएशन एकेडमी और अन्य भारतीय उड्डयन प्रशिक्षण संस्थानों के साथ भागीदारी भी है जिसके तहत ये स्टॉफ भर्ती कर सकते हैं जिससे रोज़गार के स्थानीय अवसर बढ़ेंगे।

इसका अपना ऑन-साइट केंद्र हर वर्ष 100 से ज़्यादा भारतीय तकनीशियनों और इंजीनियरों को प्रशिक्षण देगा जिससे कुशलता का निर्माण होगा और प्रोफेशनल दक्षता विकसित होगी। इसके बाद कर्मचारियों को सैफरान एयरक्राफ्ट इंजन की दुनियाभर में मौजूद विभिन्न MRO सुविधाओं में आगे प्रशिक्षण और कुशलता विकास के लिए भेजा जाएगा।

इस सुविधा से अन्य इंजन ओईएमएस में, ऐसे ही एमआरओ हब लगाने का आत्मविश्वास पैदा करके, भारत को ग्लोबल एमआरओ हब बनाने की प्रक्रिया तेज़ की जा सकेगी। विश्व-स्तर की ओईएम सुविधा, मौजूदा विकसित होते घरेलू बेड़े, प्रतियोगी श्रमशक्ति और विस्तृत होते सप्लायर बेस के एक साथ मिलने से भारत को निकट भविष्य में ही ग्लोबल MRO डेस्टिनेशन (लक्ष्य) बनने का निश्चित मार्ग मिल जाएगा।

एयरोस्पेस पार्क जैसे महत्त्वपूर्ण स्थान में होने से तथा अनेक OEM और MSMEs भी वहीं होने से सैफरान MRO साइट ऐसी अग्रणी यूनिट बन चुका है जो एयरलाइनों और पट्टादाताओं को संकेत देता है कि उच्च गुणवत्ता और किफायती लागत पर इंजन के रख-रखाव जैसे काम अब भारत में भी हो सकते हैं। सरकार का नीतिगत समर्थन मिलने, कुशल कार्यबल के विस्तार और DGCA की प्रमाणन सुविधा होने से सैफरान का MRO संयंत्र क्षेत्रीय और वैश्विक LEAP कार्य का बड़ा और सार्थक हिस्सा भारत में लाने की प्रक्रिया को गति दे सकता है।

उत्पादन उत्सर्जन को 2030 तक 50 प्रतिशत घटाने के सैफरान ग्रुप के संकल्प में सहयोग देने के लिए यह MRO केंद्र पूरी तरह हरित विद्युत से चलेगा तथा आवश्यक बिजली के एक भाग का उत्पादन वहीं समर्पित सौर फॉर्म में किया जाएगा। साथ ही, हमारी अपने इंजन टेस्ट सैल में सस्टेनेबल एविएशन फ्युएल अर्थात् टिकाऊ उड्डयन ईंधन इस्तेमाल करने की भी योजना है।

निष्कर्ष में कहा जा सकता है कि हैदराबाद में सैफरान का LEAP MRO केवल एक नई सुविधा या प्रत्यक्ष विदेशी निवेश ही नहीं है, बल्कि यह प्रणाली-स्तर का निवेश भी है जो उच्च टेक्नॉलॉजी एमआरओ क्षेत्र में भारत का भविष्य तय करेगा। अंतरराष्ट्रीय OEM मानकों के स्थानीय मैन्युफैक्चरिंग, ट्रेनिंग और स्पलाई-चेन इकोसिस्टम विकास के समन्वयन से यह परियोजना भारतीय विमानों के लिए संचालन की लचीली व्यवस्था तैयार करने और उच्चस्तरीय रोज़गार मुहैया कराने के साथ एयरोस्पेस MRO तथा उन्नत विनिर्माण के क्षेत्रों में उभरता वैश्विक हब बनने के भारत के दावे को मज़बूत करेगी।

हम भविष्य में भारत के उड्डयन इतिहास के MRO पुरोधा कहलाना चाहते हैं।

मीठी क्रांति

शहद उत्पादन में भारत का नया कीर्तिमान

जब हम सुबह की चाय में या दवा के रूप में शहद की एक बूँद का सेवन करते हैं तो अक्सर हम सिर्फ उसकी मिठास का अनुभव करते हैं। लेकिन उस सुनहरी बूँद के पीछे छिपी होती है हज़ारों किसानों की अथक मेहनत, सदियों पुरानी परम्पराएँ और प्रकृति के साथ मानव का एक अद्भुत और संवेदनशील तालमेल। आज भारत में शहद केवल एक खाद्य पदार्थ नहीं रह गया है बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई संजीवनी देने वाला एक शक्तिशाली उत्प्रेरक बन गया है। जिसे हम 'मीठी क्रांति' (Sweet Revolution) कह रहे हैं, वह वास्तव में भारत के गाँवों की बदलती तस्वीर और समृद्धि की कहानी है।

उत्पादन के नए शिखर और वैश्विक पहचान

भारत आज शहद उत्पादन के क्षेत्र में इतिहास रच रहा है। आँकड़ों पर नज़र डालें तो पिछले एक दशक में देश ने एक लम्बी छलांग लगाई है। 11 साल पहले हमारे देश में शहद का कुल उत्पादन लगभग 76 हज़ार मीट्रिक टन था। लेकिन आज किसानों के परिश्रम के बदौलत यह आँकड़ा बढ़कर डेढ़ लाख (1.5 लाख) मीट्रिक टन से भी अधिक हो गया है।

यह वृद्धि केवल घरेलू खपत तक सीमित नहीं है। भारतीय शहद की मांग वैश्विक

बाज़ार में भी तेज़ी से बढ़ रही है। इसके परिणामस्वरूप पिछले कुछ वर्षों में शहद का निर्यात तीन गुना से ज्यादा बढ़ गया है। खादी ग्रामोद्योग के 'हनी मिशन' (Honey Mission) ने इस दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस मिशन के तहत सवा दो लाख से ज़्यादा मधुमक्खी-बक्से (Bee-boxes) वितरित किए गए, जिससे हज़ारों लोगों को न केवल रोज़गार मिला बल्कि उनकी आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

कश्मीर से कन्याकुमारी तकः स्थानीयता की गूँज

इस मीठी क्रांति की सबसे ख़ास बात यह है कि इसमें हर क्षेत्र की अपनी एक अलग सुगंध और पहचान शामिल है।

जम्मू-कश्मीर के पहाड़ी इलाक़ों में एक विशेष प्रकार की वनस्पति पाई

जाती है। इसे 'वन तुलसी' या स्थानीय भाषा में 'सुलाई' कहा जाता है। यहाँ की मधुमक्खियाँ जब सुलाई के फूलों से मकरंद जमा करती हैं तो उससे एक दुर्लभ सफेद रंग का शहद तैयार होता है जिसे 'रामबन सुलाई हनी' कहा जाता है। इसकी विशिष्टता और गुणवत्ता के कारण इसे हाल ही में जीआई टैग (GI Tag) प्राप्त हुआ है। जीआई टैग मिलने से इस स्थानीय उत्पाद की पहचान अब राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बन रही है जिससे स्थानीय उत्पादकों को उनकी मेहनत का उचित मूल्य मिल रहा है।

सहकारिता और तकनीकः दक्षिण भारत का मॉडल

उत्तर से दक्षिण की ओर बढ़ें तो कर्नाटक के दक्षिण कन्नडा ज़िले का पुत्तुर क्षेत्र एक और बेहतरीन मिसाल पेश करता है। यहाँ की वनस्पतियाँ शहद उत्पादन के लिए आदर्श मानी जाती हैं। यहाँ 'ग्रामजन्य' नामक किसान संस्था ने यह साबित कर दिया है कि अगर प्राकृतिक संसाधन आधुनिक तकनीक के साथ मिल जाए तो परिणाम चमत्कारिक हो सकते हैं।

'ग्रामजन्य' ने केवल शहद इकट्ठा नहीं किया बल्कि एक आधुनिक प्रोसेसिंग

यूनिट (Processing Unit) स्थापित की। इसमें लैब टेस्टिंग, बॉटलिंग, स्टोरेज और डिजिटल ट्रैकिंग जैसी उन्नत सुविधाएँ शामिल की गईं। इसका परिणाम यह हुआ कि गाँव का यह शहद अब एक 'ब्रांडेड उत्पाद' बनकर शहरों के सुपरमार्केट तक पहुँच रहा है। इस एक प्रयास ने ढाई हज़ार से अधिक किसानों की क़िस्मत बदल दी है।

वहीं कर्नाटक के ही तुमकुरु जिले में 'शिवगंगा कालंजिया' संस्था ने आत्मनिर्भरता का एक अलग मॉडल खड़ा किया है। यह संस्था अपने सदस्यों को शुरुआत में दो मधुमक्खी बक्से देती है। इससे जुड़कर किसान सामूहिक रूप से शहद निकालते हैं, उसकी बेहतरीन पैकेजिंग करते हैं और स्थानीय बाज़ारों में बेचते हैं। आज इस छोटे से प्रयास से किसान लाखों रुपये की कमाई कर रहे हैं।

परम्परा और प्रकृति का सम्मानः नगालैंड की अनोखी रीति

शहद उत्पादन केवल पैसे कमाने का ज़रिया नहीं है बल्कि यह प्रकृति के साथ संवाद का भी एक माध्यम है। पूर्वोत्तर भारत के नगालैंड में हमें इसका एक भावुक और प्रेरणादायक उदाहरण मिलता है। यहाँ के चोकलांगन गाँव में खियामनियाँगन जनजाति सदियों से शहद निकालने का काम कर रही है।

यहाँ मधुमक्खियाँ पेड़ों पर नहीं बल्कि ऊँची और ख़तरनाक चट्टानों पर अपने छत्ते बनाती हैं। ऐसे में शहद निकालने का काम बेहद जोखिम भरा होता है। यहाँ के लोगों की परम्परा इतनी समृद्ध है कि वे शहद निकालने से पहले मधुमक्खियों से 'बात' करते हैं। वे बेहद सौम्यता से मधुमक्खियों से अनुमति लेते हैं, उन्हें बताते हैं कि वे शहद लेने आए हैं और उसके बाद शहद निकालते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि विकास और प्रकृति के बीच संघर्ष ज़रूरी नहीं है; यदि सम्मान हो तो दोनों साथ चल सकते हैं।

भारत की यह 'मीठी क्रांति' सिर्फ आंकड़ों का खेल नहीं है। यह कश्मीर की वादियों से लेकर नगालैंड की चट्टानों और कर्नाटक के गाँवों तक फैले उन लाखों किसानों की सफलता की कहानी है जिन्होंने मधुमक्खी पालन को अपनी समृद्धि का आधार बनाया है। शहद की यह मिठास वास्तव में 'आत्मनिर्भर भारत' की बढ़ती ताक़त का प्रतीक है।

पहाड़ियों से लेकर जंगलों और चट्टानों तक

भारत की अद्‌भुत शहद विरासत

पश्चिमी घाट की पहाड़ियों से लेकर घने जंगलों और पर्वतीय चट्टानों तक, भारतीय शहद की कहानी प्रकृति और परम्परा में गहराई से रची-बसी है। हर क्षेत्र अपनी विशिष्ट वनस्पतियों, जलवायु और सदियों पुरानी परम्पराओं से सुसज्जित शहद का उत्पादन करता है। आज यह विरासत वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन, GI टैग और समुदाय-नेतृत्व वाले प्रयासों के माध्यम से और सशक्त हो रही है जो स्थानीय शहद को आजीविका, पहचान और वैश्विक गर्व का स्रोत बना रही है। इसके विचार इस बात को क़रीब से जानने का अवसर देते हैं कि परम्परा, विज्ञान और आजीविका एक साथ मिलकर कैसे एक अनोखे संगम का निर्माण कर रहे हैं।

"पश्चिमी घाट की तलहटी में स्थित हमारा क्षेत्र हमें वनस्पतियों, वन प्रजातियों, बाग़ानी फ़सलों और यहाँ तक कि औषधीय पौधों की असाधारण विविधता देता है। यही कारण है कि हमारा शहद स्वाद, सुगंध और पोषक तत्वों के लिहाज़ से अधिक समृद्ध होता है। GI टैग प्राप्त वैराइटी के आकर्षण के साथ इसका भविष्य बेहद उज्ज्वल है। भारत का 'राष्ट्रीय शहद मिशन' वैज्ञानिक मधुमक्खी पालन को आगे ले जा रहा है और निर्यात तेज़ी से बढ़ रहा है। दक्षिण कन्नड़ एक प्रमुख शहद क्लस्टर बनने के लिए पूरी तरह उपयुक्त है। ग्रामजन्य का उद्देश्य ट्रेसेबिलिटी, लैब टेस्टिंग और मूल्यवर्धित उत्पादों को शामिल करते हुए इस आंदोलन का नेतृत्व करना है, ताकि हमारे क्षेत्र का शहद केवल भारत ही नहीं बल्कि वैश्विक बाज़ारों तक पहुँचे।"

रामप्रतीक करियाल, 'ग्रामजन्य', दक्षिण कन्नड़, कर्नाटक

"यह हमारे लिए बहुत ख़ुशी की बात है। सबसे पहले हमें ODOP (एक ज़िला एक उत्पाद) में शामिल किया गया था। उसके बाद GI टैग मिलना हमारे लिए बड़े सम्मान की बात है। उससे बढ़कर हमारे लिए ख़ुशी की बात यह है कि प्रधानमंत्री जी ने 'सुलाई' का नाम लिया। 'सुलाई हनी' रामबन ज़िले की पहचान है। यह केवल शहद नहीं है बल्कि एक दवाई है। इसकी बड़ी ख़ासियत है। इस मधुमक्खी पालन के सफ़र में हमारे साथ 500 लोग जुड़े हुए हैं। हमारे इलाक़े में खाने-कमाने का यही एक ज़रिया है। इसलिए मेरी गुज़ारिश है कि इसे ज़्यादा से ज़्यादा बढ़ावा दिया जाए।"

फारिक़ अहमद वानी, अध्यक्ष, बीकीपिंग एसोसिएशन, रामबन, जम्मू और कश्मीर

"यह परियोजना मुख्य रूप से ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए वैकल्पिक आजीविका सृजित करने और उनकी आय बढ़ाने के उद्देश्य से है। हमने FPO में मधुमक्खी पालन के लिए 1500 महिला किसानों की पहचान की है। SCSP और TSP परियोजना के तहत हमने ST और SC महिला किसानों को 226 मधुमक्खी बक्से निःशुल्क उपलब्ध कराए। यह गतिविधि कम आय वाली महिला किसानों को वैकल्पिक आजीविका प्रदान कर रही है। हम हर सप्ताह इन मधुमक्खी बक्सों की निगरानी करते हैं। हमने महिला किसानों को मधुमक्खी बक्सों के प्रबंधन और बेहतर शहद उत्पादन के लिए उनकी देखभाल से सम्बंधित प्रशिक्षण भी दिया है। हमारा शहद बाहरी बाज़ार की तुलना में उचित कीमतों पर उपलब्ध है।"

रामचंद्र बी.एम., सीईओ, शिवगंगा कलंजिया जीविदम, तुमकुरु, कर्नाटक

नायब सिंह सैनी
मुख्यमंत्री
हरियाणा

अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव

गीता की विश्व यात्रा

पाँच शताब्दियों से भी पूर्व भगवान श्रीकृष्ण का 'भगवद् गीता' के रूप में अर्जुन को दिया गया शाश्वत उपदेश का आज विश्व भर में प्रसार हो चुका है। आज यह विश्व के सर्वाधिक सम्मानित आध्यात्मिक ग्रंथों में से एक है। इसी प्रकार, कुरुक्षेत्र स्थित पावन ब्रह्म सरोवर में प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव भी एक क्षेत्रीय आयोजन न रह कर, अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आंदोलन बन चुका है जो हर महाद्वीप में गीता के बढ़ते प्रभाव का प्रतीक है।

आध्यात्मिक चेतना जगाने वाले गीता महोत्सव का आयोजन, हरियाणा सरकार ने कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के माध्यम से वर्ष 1989 में आरम्भ किया। वर्ष 2014 में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने गीता का सन्देश समूचे विश्व में पहुँचाने के उद्देश्य से इस आयोजन को अन्तरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का रूप दिए जाने की इच्छा व्यक्त की।

माननीय प्रधानमंत्री की इच्छा के अनुरूप हरियाणा सरकार ने वर्ष 2016 में प्रथम अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव आयोजित किया जिसका उद्देश्य गीता का शांति, सद्भाव और सार्वभौमिक बंधुत्व का शाश्वत सन्देश सम्पूर्ण मानवता तक पहुँचाना था।

गीता के सन्देश ने विश्व भर में जो अनुगूँज पैदा की उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन अब तक यूनाइटेड किंगडम, मॉरीशस, कनाडा, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया सहित विश्व के 30 से अधिक देशों में किया जा चुका है। यह महोत्सव धीरे-धीरे एक वैश्विक मंच के रूप में विकसित हो रहा है जिसमें यूरोप, मध्य एशिया, उत्तरी अमेरिका, अफ्रीका तथा मध्य-पूर्व के देश शामिल हो रहे हैं। गीता की वैश्विक यात्रा में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उपलब्धि सऊदी अरब में आयोजित महोत्सव रहा है।

महोत्सव के अंतर्गत गीता को, ओटावा में कनाडा की संसद, लंदन के हाउस ऑफ कॉमंस तथा अन्य देशों के इसी प्रकार के प्रमुख सरकारी प्रतिष्ठानों में रखा गया। इतना ही नहीं, ब्रैम्पटन (कनाडा) और लेस्टर (यूके) शहरों ने अपने एक नगर उद्यान का नाम श्रीमद्भगवद् गीता पार्क रखा है, तथा विश्व के कुछ प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में गीता पीठ भी स्थापित की गई है।

वर्ष 2025 में विदेश मंत्रालय (MEA) एक प्रमुख साझेदार के रूप में आगे आया और इसने महोत्सव को व्यापक सहयोग दिया। विश्वभर में स्थित भारतीय मिशनों के साथ समन्वय करके MEA ने महोत्सव को और सशक्त किया, अंतरराष्ट्रीय सहभागिता आसान की तथा गीता को शांति व सद्भाव के सार्वभौमिक ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत करके भारत की सांस्कृतिक कूटनीति को नई ऊँचाई दी।

वास्तव में, महोत्सव का वैश्विक स्वरूप बनने से बहुत पहले ही अनेक विदेशी विद्वान और दार्शनिक, गीता का सन्देश गहराई से समझ कर इसकी सराहना कर चुके थे। वेदों और उपनिषदों का लैटिन में अनुवाद करने वाले जर्मन दार्शनिक मैक्स मूलर, गीता में निहित 'सर्वोच्च ज्ञान' को अत्यंत मूल्यवान मानते थे।

एक अन्य जर्मन दार्शनिक आर्थर शोपेनहावर गीता से अत्यंत प्रभावित थे और उन्होंने इसकी शिक्षाओं में वैराग्य के माध्यम से मुक्ति का मार्ग पाया था। उन्होंने इसे 'विश्व के पास प्रदर्शित करने योग्य सबसे गहन और सर्वोच्च वस्तु' बताया और भौतिक जगत को क्षणभंगुर एवं माया बताने वाली इसकी विवेचना में गहरा साम्य पाया। वे गीता से इतने अधिक अभिभूत थे कि वे इसे एक उदात्त दार्शनिक गीत, गहन आध्यात्मिक मार्गदर्शक और प्राचीन ज्ञान का सशक्त साक्षी मानते हुए 'गीता' को सिर पर रखकर बर्लिन की गलियों में दौड़े थे।

अपने बहुप्रशंसित और बहुप्रतीक्षित 'मन की बात' कार्यक्रम के नवम्बर 2025 के अंक में प्रधानमंत्री ने भगवद् गीता की वैश्विक अनुगूँज रेखांकित की। उन्होंने कुरुक्षेत्र में आयोजित अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में विश्वभर से प्रतिभागियों के सम्मिलित होने का उल्लेख किया। उन्होंने सऊदी अरब, लात्विया तथा अन्य देशों में हाल में हुए आयोजनों का उल्लेख करते हुए बताया कि अनेक देश गीता के शांति और करुणा के सन्देश से प्रेरणा पा रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' कार्यक्रम

में कहा, "कुरुक्षेत्र के ब्रह्म सरोवर पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव में शामिल होना मेरे लिए विशेष रहा। मैं यह देख कर बहुत प्रभावित हुआ कि कैसे दुनिया भर के लोग दिव्य ग्रंथ 'गीता' से प्रेरित हो रहे हैं।"

देश-विदेश से भारी संख्या में लोगों को आकर्षित करने वाले इस महोत्सव की प्रमुख विशेषताओं में आरती एवं दीपोत्सव, गीता यज्ञ और गीता पाठ, गीता का वैश्विक सामूहिक उच्चार (वर्ष 2025 में 21,000 विद्यार्थियों सहित 1,00,000 से अधिक प्रतिभागियों ने ऑनलाइन भाग लिया), गीता सद्भावना यात्रा, पुस्तक, शिल्प एवं खाद्य मेले, रन फॉर गीता तथा गीता क्विज़ शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त, सर्व धर्म संत सम्मेलन का आयोजन भी होता है जिसमें विभिन्न धर्मों तथा विश्व के अलग-अलग क्षेत्रों से आए विद्वान, गीता की महिमा का गुणगान करते हैं और बताते हैं कि वर्तमान अशांत एवं संघर्षरत विश्व में, गीता का सन्देश कैसे मानवता के लिए सहायक हो रहा है। यह तथ्य रेखांकित करता है कि गीता किसी एक धर्म की न होकर सम्पूर्ण मानवता की धरोहर है और कैसे यह दिव्य ग्रंथ सभी को एकजुट करने में भूमिका निभा सकता है। इस वर्ष महोत्सव को अभूतपूर्व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने में विदेश मंत्रालय ने निर्णायक भूमिका निभाई और गीता सम्मेलन में 25 प्रतिष्ठित विदेशी विद्वानों की सहभागिता सुनिश्चित हुई।

एक सार्वभौमिक ग्रंथ

भगवद् गीता के सन्देश का सर्वमान्य स्वरूप और सर्वव्यापकता इसे एक सार्वभौमिक ग्रंथ बनाती है। यह किसी एक धर्म से सम्बंध नहीं रखती। गीता, मानव को जीने की कला सिखाती है और कर्मयोग (निःस्वार्थ कर्म का मार्ग), भक्ति (समर्पण) तथा सांख्य (ज्ञान) जैसे इसके उपदेश विश्व भर के साधकों को आकर्षित करते हैं। यह निष्काम भाव से लाभ-हानि तथा जय-पराजय जैसी

गणनाओं से ऊपर उठकर, कर्म करने का महान सन्देश देती है। गीता में 'धर्म' शब्द किसी सम्प्रदाय या धर्म विशेष का द्योतक नहीं है। यह तो कर्त्तव्य, नैतिक एवं आचारिक मूल्यों तथा सामाजिक व्यवस्था का प्रतीक है जो एक प्रकाश-स्तम्भ के रूप में मानवता की सेवा करता है।

कई अन्य देशों में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव का आयोजन करने के लिए कुछ सजग और ठोस उपाय किए गए। सम्पूर्ण विश्व में गीता का सन्देश पहुँचाने की माननीय प्रधानमंत्री की सोच को साकार करने के लिए हरियाणा सरकार पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

महाभारत अनुभव केंद्र जहाँ जीवंत हुआ महाकाव्य

पार्थ गुप्ता, आईएएस
निदेशक
हरियाणा पर्यटन विभाग

कुरुक्षेत्र की जिस पावन धरती पर भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को भगवद् गीता का उपदेश दिया था, वहाँ एक नया स्मारक– महाभारत अनुभव केंद्र बनाया गया है। लगभग 250 करोड़ रुपये की लागत से बना महाभारत पर आधारित परिसर केवल संग्रहालय भर नहीं है। यह भारत के एक साहसिक और परिवर्तनकारी क़दम का प्रतीक है कि अपनी अथाह सांस्कृतिक विरासत को केवल शिलालेखों और अभिलेखागारों में संजोकर नहीं अपितु सक्रिय, सर्वसुलभ और अत्याधुनिक तकनीक से संरक्षित और जीवंत रखा जाना चाहिए।

यह सोच एक प्रबल परिवर्तन का संकेत है। महाभारत अनुभव केंद्र का निर्माण भारत को संरक्षण की सांस्कृतिक परम्परा से आगे ले जाते हुए, एक अनुभवात्मक व्याख्या की दिशा में ले जाता है–एक ऐसी अवधारणा जिसमें 'हेरिटैक' (विरासत और तकनीक) का संगम, प्राचीन ग्रंथों को वैश्विक, डिजिटल-प्रथम दर्शकों के लिए प्रासंगिक और सुलभ बनाता है।

ऐसा बहुआयामी संग्रहालय जहाँ इतिहास धड़कता है

इस केंद्र की कल्पना एक ऐसे संग्रहालय के रूप में की गई है जो यहाँ आने वाले दर्शकों को अपने वर्णन से एक जीवंत अनुभूति में सराबोर कर देता है :

- **3डी प्रोजेक्शन मैपिंग और सिमुलेशन (3D Projection and Simulation)**: मुख्य दीर्घाओं में 3D लेजर प्रोजेक्शन और वॉटर स्क्रीन जैसी तकनीकों से गीता उपदेश का दिव्य क्षण पुनः साकार किया गया है। भव्य जल और लेज़र शो, ज्योतिसर के शांत सरोवर को एक जीते-जागते कैनवस में बदल कर, युद्धभूमि और श्रीकृष्ण की शिक्षाएँ साकार करता है।
- **ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) और होलोग्राम (Hologram)**: अत्याधुनिक एआर तकनीक और होलोग्राफ़िक प्रोजेक्शन, दर्शकों को महाकाव्य के पात्रों और घटनाओं के साथ प्रत्यक्ष संवाद का अवसर देते हैं जिससे महाभारत की कथा एक सजीव अनुभव बन जाती है।
- **काइनेटिक इंस्टॉलेशंस (Kinetic Installations)**: भावात्मक अनुभूति और ऐतिहासिक महत्त्व प्रभावशाली ढंग से दर्शाने के लिए, तीरों की शय्या पर लेटे भीष्म पितामह जैसे चित्रण में प्रकाश और हिलने-डुलने की क्रिया उपयोग में लाई गई है।
- **अति-वास्तविक प्रतिमाएँ (hyper realistic)**: द्रौपदी के स्वयंवर का दृश्य जहाँ अर्जुन की जीवंत प्रतिमा घूमती हुई मछली की आँख पर लक्ष्य साधे है या यज्ञाग्नि से द्रौपदी के प्रकट होने का क्षण जैसे स्थापन (Installation) ऐसी सजीव अनुभूति पैदा करते हैं जो स्थिर चित्र कभी नहीं दे सकते।

'गीता अनावृत्त' (Gita Unveiled) वाली जगह में दर्शक परस्पर संवाद सत्र में भाग ले सकते हैं- जहाँ वे प्रश्न पूछते हैं और उत्तर में भगवद् गीता के उपयुक्त श्लोक से व्यक्तिगत मार्गदर्शन पाते हैं। इस तरह का सीधा सटीक संवाद इस अनुभव केंद्र को एक अद्वितीय और विशिष्ट स्थान बनाता है।

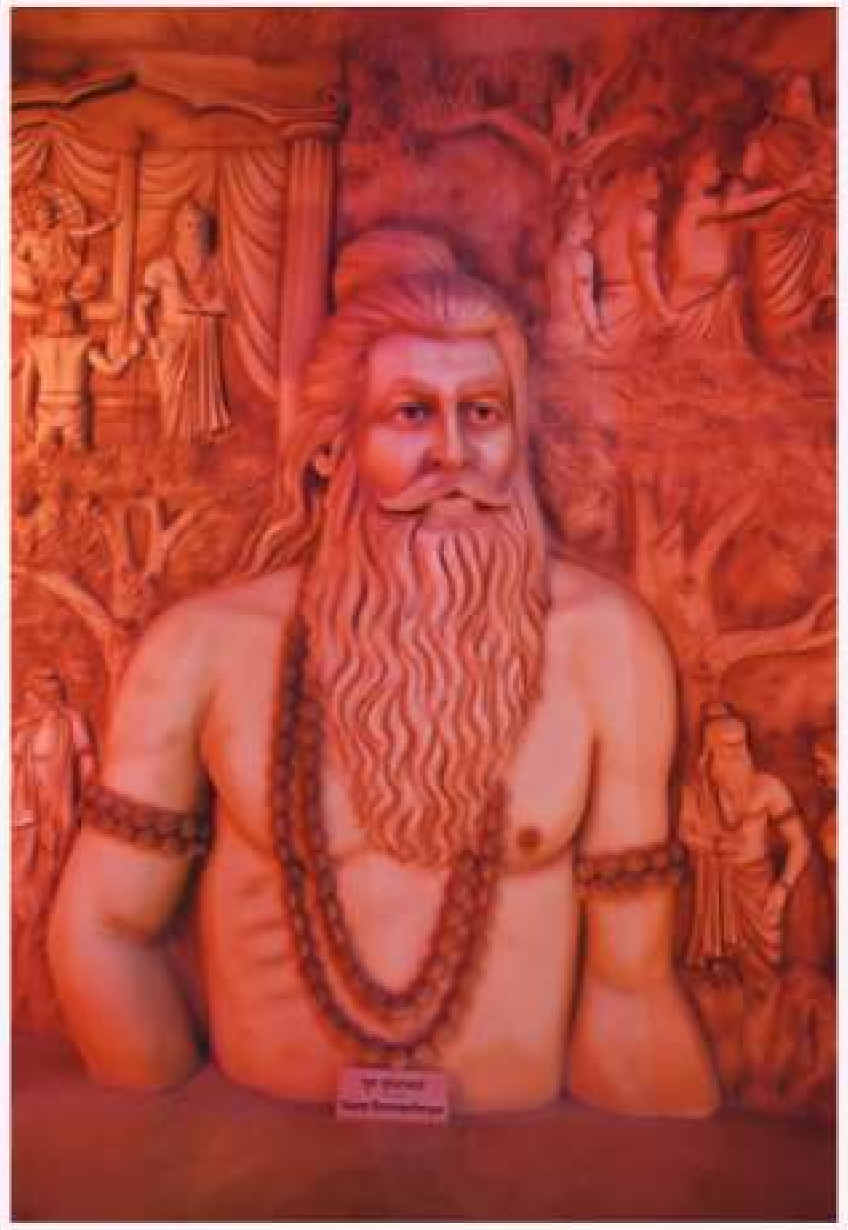

डिजिटल युग में धर्म का अर्थ तलाशना

इस डिजिटल व्याख्या का प्रमुख उद्देश्य महाभारत और भगवद् गीता की जटिल सामाजिक-दार्शनिक और नैतिक शिक्षाओं को सरल, सुलभ और बोधगम्य बनाना है।

यहाँ दर्शक महाभारत की कथा के षड्यंत्र का पासा-चौसर देखने से लेकर अर्जुन के साथ उनके रथ पर सवार होते हैं। यह केंद्र उन्हें धर्म (कर्त्तव्य और नैतिकता), कर्म (निष्काम कर्म) और आत्मा की शाश्वतता जैसे सिद्धांत आत्मसात करने में मदद करता है। बहुसंवेदी अनुभव, अमूर्त दार्शनिक अवधारणाओं को भावनात्मक और सहज रूप से स्वीकार किए जाने वाले पाठ में बदल देते हैं, जिससे महाकाव्य की नैतिक संरचना और भी सुदृढ़ होती है।

प्रस्तुति का यह अभिनव प्रारूप, प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराओं में लोगों की रुचि फिर से जगाने का काम करता है। महाभारत अनुभव केंद्र, मोबाइल स्क्रीन और इंट्रैक्टिव सामग्री के साथ पली-बढ़ी पीढ़ी के लिए इतिहास का अध्ययन रोमांचक बना देता है। प्रदर्शनी के विभिन्न क्षेत्रों में प्रस्तुत योग, चिकित्सा और गणित का प्राचीन ज्ञान, जो अब तक पाठ्य-पुस्तकों तक सीमित था, वो यहाँ सहज, रोचक और अनुभवात्मक खोज में बदल जाता है।

वैश्विक आकर्षण का नया स्वरूप

व्यापक दृष्टि से देखें तो महाभारत अनुभव केंद्र, भारत की सॉफ्ट पॉवर और वैश्विक आकर्षण को मज़बूती देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अपनी प्राचीन कथा को विश्वस्तरीय तकनीक के साथ सफलतापूर्वक एकीकृत करके, भारत अपने को एक ऐसे आधुनिक राष्ट्र के रूप में पेश करता है जो अपनी सभ्यता का सम्मान करते हुए इसे विश्व भर के दर्शकों के लिए नए रूप में प्रस्तुत कर रहा है। यह विश्वस्तरीय परियोजना विदेशी सैलानियों, विद्वानों और अध्यात्म के साधकों को आकर्षित करते हुए, कुरुक्षेत्र को सांस्कृतिक कूटनीति और आध्यात्मिक पर्यटन का एक प्रमुख वैश्विक स्थल बनाती है। यह एक स्पष्ट सन्देश भी देती है कि भारत का अतीत केवल संरक्षित ही नहीं है, अपितु नवाचार से इसका उत्सव मनाया जाता है।

सबसे महत्त्वपूर्ण तो यह है कि महाभारत अनुभव केंद्र एक ऐसा व्यावहारिक और सशक्त दृष्टांत है जिसे समूचे भारत में दोहराया जा सकता है। एआर, वीआर और इमर्सिव इंस्टॉलेशंस पर आधारित यह मॉडल अन्य महाकाव्यों, ऐतिहासिक घटनाओं और सांस्कृतिक परम्पराओं पर भी लागू किया जा सकता है:

- **डिजिटल रामायण संग्रहालयः** जो भगवान श्रीराम की ऐसी ही अनुभवात्मक जीवन-यात्रा प्रस्तुत करे।
- **डिजिटल महाकुम्भः** जो विश्व के सबसे बड़े शांतिपूर्ण संगमम् का आभासी अनुभव प्रदान करे।
- देश भर में इतिहास की महान हस्तियों या क्षेत्रीय महाकाव्यों को समर्पित केंद्रों की स्थापना।

महाभारत अनुभव केंद्र केवल एक सफल परियोजना ही नहीं है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति के एक नए युग का आरम्भ है- एक ऐसा निर्णायक क़दम जो सुनिश्चित करता है कि अतीत की गहन शिक्षाएँ भविष्य को निरंतर प्रकाशमान करती रहें।

जामसाहब महाराजा दिग्विजय सिंह जी

द्वितीय विश्वयुद्ध की त्रासदी में भारतीय संवेदना की मशाल

द्वितीय विश्वयुद्ध की त्रासदी के बीच जब समूचे यूरोप में विनाश लीला चल रही थी तथा पोलैंड की हज़ारों महिलाएँ और बच्चे सुरक्षा पाने के लिए भटक रहे थे तो नवानगर के जामसाहब महाराजा दिग्विजय सिंह जी, रणजीत सिंह जी जडेजा विपत्तियों से भरे आपदाकाल में राहत पहुँचाने वाली आशाभरी किरण बनकर उभरे थे। उन लोगों की कठिनाइयाँ दूर करने के जो महती प्रयास किए गए, वे युद्धकाल के सर्वाधिक मानवीय कार्यों में गिने जाते हैं।

पोलैंड के शरणार्थियों की दुर्दशा से द्रवित होकर जामसाहब ने गुजरात के बालाचाड़ी में विशेष शिविर लगाया जिसमें पोलैंड के एक हजार से ज़्यादा बच्चों को देखभाल, स्थिरता और मान-सम्मान से रहने की सुविधाएँ मुहैया कराई जाती थीं। सब कुछ लुटा चुके अनाथ बच्चों को तो उनमें अपनत्व और विश्वास का साकार अनुभव होता था।

बालायाड़ी शिविर के बच्चों से जामसाहब कहते थे कि जिस तरह नवानगर के लोग मुझे 'बापू' कहते हैं, वैसे ही वे भी उन्हें 'बापू' कह सकते हैं और उन्हें अपने पिता की भाँति समझ भी सकते हैं। घरों से इतनी दूर आ बसे इन बच्चों को उनकी बातें राहत और आत्मीयता का बोध कराती थीं।

पोलैंड आज भी इस मानवीय बंधन का हृदय से सम्मान करता है। वारसा के 'गुड महाराजा स्क्वायर' पर नवानगर में जामसाहब की स्मृति में बना स्मारक, पोलैंड के विस्थापित बच्चों के लिए स्नेह और संरक्षण दर्शाने पर, आज भी उनके प्रति समूचे विश्व में संदेश प्रसारित कर रहा है। पोलैंडवासी आज भी उन्हें उसी आदरभाव से देखते हैं और उन्हें 'डोब्री महाराजा' अर्थात् 'गुड महाराजा' या 'भला महाराजा' कहकर पुकारते हैं।

काशी-तमिल संगमम् और तमिल करकलम

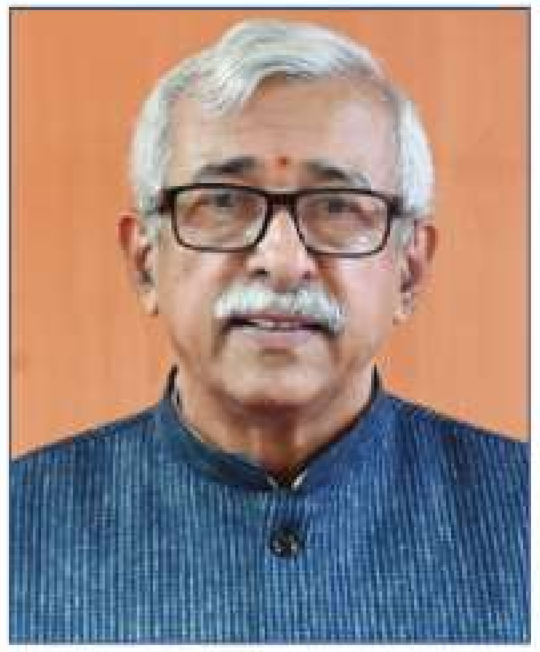

चमू कृष्ण शास्त्री
अध्यक्ष
भारतीय भाषा समिति
शिक्षा मंत्रालय

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की पहल पर आयोजित काशी-तमिल संगमम् वास्तव में एक प्रेरक पहल है जिसका उद्देश्य तमिलनाडु और काशी के आपसी कालातीत सम्बंधों को सुदृढ़ बनाना है। इसका मुख्य लक्ष्य परम्परागत और मौजूदा संवाद में सामंजस्य स्थापित करना है। माननीय प्रधानमंत्री के शब्दों में, 'काशी-तमिल संगमम्', 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना को बल प्रदान करता है'... 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' की भावना का प्रवाह आज हमारे देश में नए प्राणों का संचार कर रहा है।

शिक्षा मंत्रालय **'एक भारत, श्रेष्ठ भारत'** की भावना को बढ़ावा देने के बारे में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों के अनुरूप ही अपने उच्च शिक्षण संस्थानों के माध्यम से युवा संगमम् आयोजित करता है जिनके तहत दो राज्यों के युवा परस्पर समानुभूति और संवेदना तथा एक-दूसरे के बारे में गहन अनुभूति विकसित कर सकें। **काशी-तमिल संगमम्** भी इसी भावना से आयोजित किया जाता है ताकि समूचे समुदाय को भारत की संस्कृति की एकजुटता को जानने-समझने का अवसर प्राप्त हो और उनके मस्तिष्क से भ्रामक धारणाएँ दूर की जा सकें।

काशी-तमिल संगमम् अब शिक्षा मंत्रालय तथा भारत सरकार के कई अन्य मंत्रालयों का बेहद लोकप्रिय आयोजन बन चुका है जिसे आईआईटी मद्रास, बीएचयू, वाराणसी और उत्तर प्रदेश सरकार मिलकर आयोजित करते हैं। काशी-तमिल संगमम् विभिन्न भाषाएँ बोलने वाले लोगों को जोड़ता है प्राचीन सभ्यता की परम्पराओं को एकजुट करता है संस्कृति के बारे में लोगों की सोच के अंतर को पाटता है, विभिन्न क्षेत्रों में लोगों के भावनात्मक सम्बंधों को नई ऊर्जा तथा लोगों को समस्त जीवधारियों की सहज एकरूपता का अनुभव प्रदान करता है दो क्षेत्रों की सोच में निकटता लाता है और उनके दिलों में अपनत्व जगाता है। इन सबसे बढ़कर भारत की विभिन्न भाषाएँ जानने या सीखने में रुचि पैदा करता है।

यह आयोजन कार्तिक माह में आयोजित किया गया था क्योंकि उस समय तमिलनाडु में कार्तिकेय पूजा की जाती है। तमिलनाडु में 3 दिसम्बर से 5 दिसम्बर तक *कार्तिकई दीपम उत्सव* आयोजित किया गया था तथा 4 दिसम्बर को मार्गशीर्ष पूर्णिमा के दिन अन्नपूर्णा माता जयंती मनाई गई। 11 दिसम्बर को महाकवि सुब्रमण्यम भारती जयंती के दिन भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय ने 'भारतीय भाषा दिवस' मनाया था। इस प्रकार 2 दिसम्बर से 15 दिसम्बर तक काशी-तमिल संगमम् का चौथा वार्षिक आयोजिन तमिलनाडु और वाराणसी दोनों के लिए विशेष रहा।

केटीएस 4.0 (काशी-तमिल संगमम् 4.0) का विशेष विषय था 'आओ तमिल सीखें-करपोम तमिल'। इस आयोजन से एकजुटता का यही संदेश प्रचारित होता है कि सभी भारतीय भाषाएँ हमारी भाषाएँ हैं और ये सभी भारतीय भाषा के एक ही परिवार से जुड़ी हैं। साथ ही, इस आयोजन से तमिल भाषा को देश के अन्य भागों तक पहुँचाने की पहल भी की गई जिसमें सांस्कृतिक एकजुटता के महत्त्व और पुरातन तमिल ग्रंथों में समाहित प्राचीन जानकारी अन्य भारतीय भाषाओं में भेजी जा सकती है।

केटीएस 4.0 के तमिल करकलम कार्यक्रम के पहले भाग में तमिलनाडु के 50 तमिल शिक्षक शामिल थे जो वाराणसी और उसके आसपास के स्थानों के 50 विद्यालयों के विद्यार्थियों को बातचीत की प्रारम्भिक तमिल भाषा सिखाने वाराणसी जाते हैं। आयोजन के दूसरे भाग में कॉलेज विद्यार्थियों के दस चुने हुए बैच शामिल होते हैं। इनमें से हर बैच में वाराणसी के 30 विद्यार्थी रहते हैं जो तमिल भाषा सीखने और तमिलनाडु की समृद्ध परम्परा को समझने के लिए 15 दिन के लिए जाकर तमिलनाडु में रहते हैं।

काशी-तमिल संगमम् की तमिल करकलम गतिविधि के तहत वाराणसी के सभी भागों के 50 स्कूलों में तमिल भाषा सिखाने के उद्देश्य से आयोजित यह स्कूल आउटरीच कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को प्रेरणा देना, शिक्षकों को सहयोग देना और शिक्षा के माध्यम से संस्कृति और एकता के सूत्र को मजबूत बनाना था। दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की ओर से आए इन तमिल शिक्षकों का प्रत्येक स्कूल में भव्य

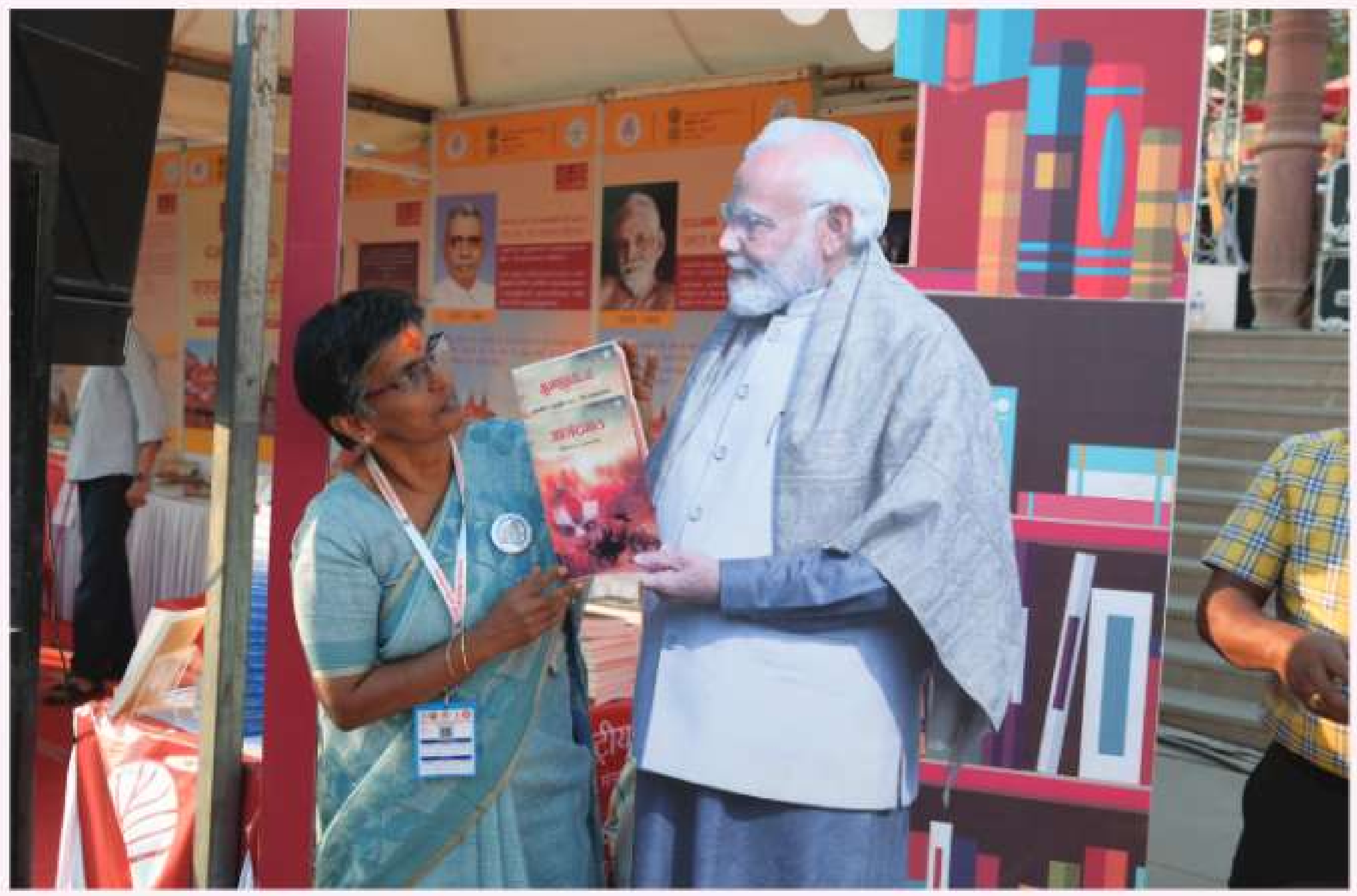

स्वागत किया गया जिससे इस कार्यक्रम से जुड़े हर व्यक्ति में उत्साह और प्रेरणा का संचार हुआ। वाराणसी के स्कूलों में विद्यार्थियों और शिक्षकों ने बताया कि एक अन्य भारतीय भाषा सीखना आसान है क्योंकि रोजमर्रा की बातचीत में इस्तेमाल होने वाले बहुत से शब्द तो एक से ही हैं।

50 स्कूलों के शिक्षकों-वॉलंटियर ने हर सत्र में करीब डेढ़ हज़ार विद्यार्थियों से बातचीत की और इस प्रकार दो प्रमुख सत्रों में कुल तीन हज़ार से ज़्यादा विद्यार्थी शामिल हुए। विद्यार्थियों ने सभी गतिविधियों और चर्चाओं में उत्साह के साथ हिस्सा लिया तथा तमिल सीखने में गहरी रुचि दिखाई। शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में चेन्नई के सेंट्रल इंस्टिट्यूट ऑफ क्लासिकल तमिल (CICT) द्वारा तैयार करके प्रकाशित की गई शिक्षण सामग्री में पाँच पुस्तकें (तमिल करकलम संस्करण I से V) और 11 विभिन्न चार्टों से तमिल सीखने की प्रक्रिया और महत्त्वपूर्ण बन गई। सीआईसीटी ने शिक्षकों को भी शिक्षण कार्य में मदद के लिए सुविधाएँ उपलब्ध कराई थीं। बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी (BHU) के तमिल विभाग और उत्तर प्रदेश सरकार के स्कूल प्रशासन विभाग ने इस

समूचे कार्यक्रम में पूरे मनोयोग से सहयोग दिया।

एक अहम बात यह देखने में आई कि प्राथमिक विद्यालयों ने भी इस कार्यक्रम में बड़ी रुचि दिखाई। उनकी जिज्ञासा से पता चलता है कि एक और भारतीय भाषा सीखने के लिए प्राथमिक स्तर पर विशेष प्रकार की कक्षाएँ चलाने की ज़रूरत है जैसा कि स्कूलों ने भविष्य के इन कार्यक्रमों में अपनाने का अनुरोध भी किया है। खास बात यह भी है कि वाराणसी के शिक्षक और विद्यार्थी यह संदेश भली प्रकार समझ गए कि किसी भारतीय भाषा को अंग्रेज़ी के माध्यम से सीखने के मुकाबले किसी अन्य भाषा के माध्यम से सीखना ज़्यादा आसान है क्योंकि इनमें भाषायी समानता रहती है।

वाराणसी के स्कूल शिक्षकों की भागीदारी भी इतनी ही प्रेरक रही। प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने शिक्षण-सत्रों की उपयोगिता की सराहना की और तमिल सीखने की प्रक्रिया में गहरी रुचि दिखाई। कई शिक्षकों ने अपने व्यावसायिक विकास के लिए विशेष ट्रेनिंग सेशन करने को कहा

तथा क्षमता निर्माण कार्यक्रमों की माँग भी उठाई।

इस आउटरीच का एक अहम और सार्थक पहलू था दृष्टिबाधित तथा अन्य दिव्यांग बच्चों को इस कार्यक्रम में शामिल करना। इन बच्चों की सक्रिय भागीदारी से कार्यक्रम की समावेशी भावना को बढ़ावा मिला। सीआईसीटी ने पूरा ध्यान रखा कि शिक्षण सामग्री और बातचीत से उन्हें मदद मिले और इनका लाभ उन्हें प्राप्त हो।

कुल मिलाकर, केटीएस 4.0 के तमिल करकलम कार्यक्रम से विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करने, शिक्षकों को शामिल करने और समूचे क्षेत्र में 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' पहल के तहत समावेशी शिक्षा उपलब्ध कराने में काफी बड़ी सफलता मिली।

भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने की इस पहल को विस्तार देकर दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा जैसे संस्थानों के वॉलंटियर शिक्षकों की सहायता से भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने की इस पहल को विस्तार देकर क्षमता निर्माण के विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से देशभर के विद्यार्थियों और समुदायों को लाभ पहुँचाया जा सकता है तथा भारतीय नागरिकों के बीच परस्पर सद्भाव और अपनत्व बढ़ाया जा सकता है। काशी-तमिल संगमम् भारत की अनूठी विविधिताओं को मनाने, लोगों की भावनात्मक एकता को अनुभव करने, कोई नई भारतीय भाषा सीखने की सरलता और रोमांच का आनंद लेने, हर प्रकार की विघटनकारी सोच प्रक्रिया को त्यागने तथा राष्ट्रीय एकता को मज़बूत बनाने का महान उत्सव है।

आईएनएस माहे

भारतीय नौसेना की मज़बूत स्वदेशी क्षमता का प्रतीक

देश की नौसेना में 24 नवम्बर, 2025 को 'आईएनएस माहे' शामिल किए जाने के साथ ही भारतीय नौसेना ने रक्षा उपकरणों के निर्माण में पूर्ण स्वदेशीकरण और *आत्मनिर्भर भारत* के लक्ष्य की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की है। यह माहे श्रेणी का पहला एंटी-सबमरीन वॉरफेयर शैलो वॉटर क्राफ्ट (ASW-SWC) है, जिसे तटीय समुद्री सुरक्षा की विशेष चुनौतियों से निपटने के लिए पूरी तरह स्वदेश में विकसित किया गया है। कोचिन शिपयार्ड लिमिटेड का बनाया यह 'साइलेंट हंटर' भारत की विशाल समुद्री सीमाओं की सुरक्षा को समर्पित है।

स्वदेशीकरण अभियान

माहे श्रेणी का विकास और समावेशन, भारतीय नौसेना के 'विज़न 2047' के अनुरूप है जिसका उद्देश्य बल को पूर्णतः स्वदेशी और तकनीकी रूप से उन्नत बनाना है। 'आईएनएस माहे', नौसैनिक डिज़ाइन, निर्माण और प्रणाली एकीकृत करने में भारत की बढ़ती क्षमता का प्रमाण है जिसमें 80% से अधिक स्वदेशी सामग्री का उपयोग किया गया है।

इस उच्चस्तरीय आत्मनिर्भरता ने एक व्यापक रक्षा औद्योगिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा दिया है जिसमें प्रमुख भारतीय सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम नौसेना भौतिक समुद्र विज्ञान प्रयोगशाला-NPOL और 20 से अधिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) शामिल हैं। इसके अलावा, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स (BEL), लार्सेन एंड ट्युब्रो (L&T) डिफेंस और महिंद्रा डिफेंस सिस्टम्स जैसे अहम उद्योगों के सहयोग से रक्षा उपकरणों के विनिर्माण में सफलता मिली। यह परियोजना न केवल महत्त्वपूर्ण परिचालन की आवश्यकताएँ पूरी करती है बल्कि रोज़गार के अवसर और विनिर्माण की घरेलू इकाईयों की क्षमता भी सुदृढ़ करती है।

आत्मनिर्भरता को बल देने की इस यात्रा में भारतीय नौसेना में यह बदलाव, 'भारतीय नौसेना स्वदेशीकरण योजना (INIP) 2015–2030' के निर्देशन में हुआ जो 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर भारत' के दीर्घकालिक कार्यक्रम के अनुरूप नौसैनिक उपकरणों एवं प्रणालियों के स्वदेशी विकास को गति दे रहा है। आईएनआईपी जहाज़ के

ढाँचे, संचालक गति, युद्ध प्रणालियों और सेंसरों में क्षमतागत अंतर की पहचान करके भविष्य की आवश्यकताओं की स्पष्ट जानकारी देता है, तथा डीआरडीओ डीपीएसयू निजी कम्पनियों और MSMEs को घरेलू उन्नत तकनीकें विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

डिज़ाइन, क्षमता और संचालन सम्बंधी भूमिका

आईएनएस माहे एक सुगठित किन्तु शक्तिशाली युद्धपोत है जिसे तटीय क्षेत्रों में गतिपूर्वक, चुपके से और अचूक प्रहार के लिए बनाया गया है। लगभग 1100 टन भार और 78 मीटर लम्बा यह पोत, वॉटरजेट प्रॉपल्शन से लैस है जो उथले जल में 25 नॉट की अधिकतम गति और बहुत फुर्ती से चल सकता है। माहेश्रेणी का प्रमुख दायित्व, तटीय जल में पनडुब्बी-रोधी अभियानों का संचालन करना है जहाँ पानी की सीमित गहराई और जलमग्न अवरोध जैसी चुनौतियाँ आड़े आ सकती हैं। अत्याधुनिक स्वदेशी सेंसर, हथियार और संचार प्रणालियों से सुसज्जित यह पोत, पानी में छिपे ख़तरों का सटीक पता लगाने, उनका पीछा करने और उन्हें निष्प्रभावी करने में सक्षम है। यही नहीं, यह पोत कम तीव्रता वाले समुद्री अभियानों (LIMO), जल के नीचे निगरानी, खोज

एवं बचाव तथा उन्नत माइन बिछाने में भी सक्षम है।

बेड़ा और भविष्य

आठ एएसडब्ल्यू-एसडब्ल्यूसी पोतों के निर्माण के लिए 30 अप्रैल, 2019 को रक्षा मंत्रालय और सीएसएल के बीच अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए थे। आठों पोत की डिलीवरी 2028 तक पूरी होने की आशा है। इन स्वदेशी मंचों का एक साथ विकास करके जलावतरण किए जाने से स्पष्ट है कि देश ने पूर्णतः स्वदेशी नौसैनिक बेड़े के निर्माण की दिशा में तेज़ी से प्रगति की है।

पोत का नाम मालाबार तट के ऐतिहासिक तटीय नगर **माहे** पर रखे जाने का सांस्कृतिक और रणनीतिक दृष्टि से गहरा प्रतीकात्मक महत्त्व है। इसके शिखर में कलरीपयट्टु मार्शल आर्ट का लचीला शस्त्र **'उरुमि'** दर्शाया गया है जो अभियानों में फुर्ती, अचूक और घातक गरिमा का प्रतीक है। पोत का आदर्श वाक्य 'साइलेंट हंटर्स' (मौन शिकारी) पनडुब्बी-रोधी युद्ध के लिए आवश्यक गोपनीयता, सतर्कता और तत्परता जैसे मूल गुण अभिव्यक्त करता है।

आईएनएस माहे का नौसेना में शामिल किया जाना भारतीय बेड़े में केवल एक नए पोत की वृद्धि मात्र नहीं है अपितु यह भारत की सामुद्रिक गाथा में एक महत्त्वपूर्ण प्रगति का प्रतीक है। यह उस राष्ट्र के आत्मविश्वास का प्रतीक है जो अपनी रक्षा क्षमताओं का निर्माण स्वयं कर रहा है, अपने रणनीतिक भविष्य को स्वयं आकार दे रहा है और ऐसे भविष्य की दिशा तय कर रहा है जहाँ भारतीय नौसेना डिज़ाइन, भावना और क्षमता–तीनों में निःस्संदेह भारतीयता के साथ अग्रसर है।

एडमिरल दिनेश के. त्रिपाठी
पीवीएसएम, एवीएसएम, एनएम
नौसेनाध्यक्ष

नौसेना संग्रहालयों के माध्यम से जानिए भारत की समुद्री शक्ति

भारत की समुद्री विरासत उसकी गहरी सभ्यतागत पहचान में निहित है जिसका इतिहास लगभग 5,000 वर्ष पुराना है। 'ऋग्वेद' में समुद्री यात्राओं के उल्लेख मिलते हैं, जबकि लोथल के गोदी-स्थल हड़प्पा काल के दौरान उन्नत जहाज निर्माण, नौवहन और विदेशों से व्यापार के सशक्त प्रमाण हैं। प्राचीन भारतीय नाविकों ने खगोल विज्ञान तथा मानसूनी हवाओं की प्रवृत्तियों के आकलन में दक्षता हासिल करके अफ्रीका, पश्चिम एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया तक पूरे आत्मविश्वास के साथ नौकायन किया जिससे विश्व के सबसे प्रारम्भिक और समृद्ध समुद्री व्यापार नेटवर्कों में से एक का निर्माण हुआ।

छत्रपति शिवाजी महाराज के कालजयी सिद्धांत *'जलमेव यस्य बलमेव तस्य'* अर्थात् *'जिसका समुद्र पर नियंत्रण है, वही सर्वशक्तिमान है'* से लेकर माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 'पारस्परिक और समग्र प्रगति के लिए क्षेत्रीय सुरक्षा एवं विकास' (महासागर – MAHASAGAR) की समुद्री दृष्टि तक, भारत का ध्यान 'समुद्री विषयों' पर निरंतर केंद्रित रहा है। यह इस तथ्य की स्पष्ट स्वीकारोक्ति है कि विकास, समृद्धि और सुरक्षा को समुद्र से अलग नहीं किया जा सकता।

देश भर में बने नौसैनिक संग्रहालय भारत की समृद्ध समुद्री विरासत और राष्ट्रीय गौरव के सशक्त प्रतीक हैं। ये पीढ़ियों के बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु का काम करते हैं, जहाँ राष्ट्र का समुद्री अतीत दर्शाने वाली **मूर्त विरासत** (कलाकृतियाँ) और **अमूर्त परम्पराएँ** संरक्षित और प्रदर्शित की जाती हैं। ये संग्रहालय, प्राचीन समुद्री परम्पराओं को आधुनिक नौसैनिक क्षमता की परिष्कृत शक्ति से जोड़ते हुए, बड़े ही प्रभावशाली ढंग से दर्शकों को भारत की असाधारण समुद्री यात्रा का समग्र दर्शन कराते हैं।

आंध्र प्रदेश के विशाखापत्तनम में कुर्सुरा पनडुब्बी संग्रहालय है, जहाँ पनडुब्बी के भीतर जाकर उसे देखने का दुर्लभ अनुभव मिलता है; साथ ही, TU-142 विमान संग्रहालय भी है जहाँ समुद्री हवाई निगरानी तथा पनडुब्बी-रोधी अभियानों का दशकों लम्बा योगदान देखा जा सकता है। केरल के कोच्चि में आईएनएस द्रोणाचार्य स्थित नौसैनिक अड्डे के समुद्री संग्रहालय में, भारत के पश्चिमी तट पर नौसैनिक युद्धकला और समुद्री व्यापार के विकास की कहानी देखी जा सकती है। केंद्रशासित प्रदेश दीव में स्थित आईएनएस खुकरी मेमोरियल, 1971 के युद्ध में नष्ट हुई फ्रिगेट की स्मृति को एक श्रद्धांजलि है जो उसके चालक दल के शौर्य को सम्मानित करता है। भारतीय नौसेना ने तटरेखा से परे भी समुद्री विरासत को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश सरकार के सहयोग से लखनऊ में नौसेना शौर्य वाटिका के विकास में मदद की गई ताकि देश के भीतरी इलाक़ों के दर्शकों को युद्धपोतों, विमानों और मिसाइल प्रणालियों की प्रतिकृतियों से नौसैनिक शक्ति का अनुभव मिल सके।

गुजरात के लोथल में निर्माणाधीन राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर (नेशनल मैरीटाइम हेरिटेज कॉम्प्लैक्स – NMHC) विश्व की सबसे बड़ी समुद्री विरासत परियोजनाओं में से एक होगा। यह हड़प्पा-कालीन समुद्री संस्कृति, प्राचीन नौवहन, प्रारम्भिक पोत निर्माण तथा विश्व भर में भारत के समुद्री सम्पर्कों को प्रमुखता से सामने लाएगा। भारतीय नौसेना ने लोथल स्थित NMHC को सहयोग देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके साथ ही, अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह के श्रीविजयपुरम में उन्नत किया गया राष्ट्रीय समुद्री संग्रहालय भी देश की समुद्री विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए कटिबद्ध है।

नौसेना के ये संग्रहालय युवा भारतीयों का समुद्री शक्ति से सम्बद्ध मंचों, प्रौद्योगिकियों और परम्पराओं से

भारतीय नौसेना समुद्री संग्रहालय, कोच्चि

नौसेना विमान संग्रहालय, गोवा

विशाखापत्तनम में टीयू-142 विमान संग्रहालय

सीधा परिचय करवा कर उन्हें प्रेरित करते हैं। इन परिसरों में प्रदर्शित जहाज़, पनडुब्बियाँ, विमान तथा उनकी प्रणालियाँ, और उनसे जुड़ी परिचालन की कहानियाँ, न केवल नौसेना के प्रति बल्कि महासागर विज्ञान, समुद्री अभियांत्रिकी और रोबोटिक्स सहित व्यापक समुद्री क्षेत्र के प्रति भी जिज्ञासा पैदा करती हैं।

युवाओं में अधिक समग्र और जागरूक दृष्टि विकसित करने के लिए इन संग्रहालयों में स्वयं हाथ से सीखी जा सकने वाली वस्तुओं, प्रस्तुतियों तथा अनुभवी पूर्व सैनिकों के साथ संवाद पर विशेष बल दिया गया है ताकि यहाँ आने वाले लोग नौसेना की भूमिका बेहतर ढंग से समझ सकें और भारत की समुद्री पहचान से जुड़ सकें।

नौसेना संग्रहालय केवल इतिहास के संरक्षण तक सीमित नहीं हैं; ये राष्ट्रीय चरित्र निर्माण में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका

नौसेना विमान संग्रहालय, गोवा

निभाते हैं। ये संग्रहालय, **देखो अपना देश** जैसी पहल और तटीय विरासत स्थलों के पुनर्विकास के साथ मिलकर, भारत की सामुद्रिक नियति स्वीकार करने की दिशा में सोच-समझ कर किए गए परिवर्तन का संकेत देते हैं। जैसे-जैसे भारत एक प्रमुख समुद्री शक्ति के रूप में उभर रहा है, ये संग्रहालय ऐसे जागरूक नागरिक बनाने में मदद कर रहे हैं जो नौसेना-कर्मियों की सेवा और बलिदान तथा भारत की समुद्री उपलब्धियों को समझते हुए, भारत के नियति निर्माण में महासागरों की शक्ति को पुनः रेखांकित करते हैं। नवाचार, डिजिटलीकरण और आधुनिक प्रौद्योगिकियों की मदद से दर्शकों की पहुँच और अनुभव को निरंतर बेहतर बनाने पर ध्यान देते हुए भारतीय नौसेना, समुद्री चेतना को बढ़ावा देने और सागर संग भारत का शाश्वत सम्बंध सुदृढ़ करने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है।

भारतीय नौसेना समुद्री संग्रहालय, कोच्चि

दीव में आईएनएस खुकरी स्मारक

विशाखापत्तनम में भारतीय नौसेना पनडुब्बी संग्रहालय, कुरसुरा

सर्दियों का वादा

भारत में पर्यटन और एडवेंचर

भारत में और विशेषकर हिमालय के भव्य क्षेत्र में सर्दियाँ साधारण मौसम जैसी नहीं होतीं बल्कि वहाँ अनुपम सौन्दर्य से भरपूर प्राकृतिक छटा के साथ अवसरों की भरमार रहती है। इस मौसम में स्थानीय अर्थव्यवस्था में ज़बर्दस्त उछाल लाने और अविस्मरणीय अनुभव कराने की अद्भुत क्षमता होती है। सर्दियों में पारम्परिक पर्यटन और शीतकालीन खेलों तथा साहसिक अभियानों का सिलसिला बना रहता है। इससे देश में सकारात्मक विकास को गति मिलती है।

भारत के शीतकालीन स्थल निश्चित रूप से बेहद आकर्षक हैं। औली, मुंस्यारी, चोपटा और दायरा जैसे स्थानों की सर्दियों वाले महीनों में बढ़ती लोकप्रियता से पता चलता है कि लोग हिमाच्छादित पर्वतीय शृंखला और मनोहारी प्राकृतिक दृश्य निहारने को कितने उत्सुक रहते हैं। बेसिक पर्यटन के साथ ही सुनियोजित साहसिक अभियान भी तेज़ी से बढ़ रहे हैं। इसका बड़ा उदाहरण है- 2 नवम्बर, 2025 को पिथौरागढ़ के आदि कैलाश

में आयोजित 'प्रथम हाई एल्टीट्यूड अल्ट्रा रन मैराथन' जिसमें कड़कड़ाती ठंड के बीच 750 से ज़्यादा एथलीटों ने 14,500 फुट से भी ज़्यादा ऊँचाई पर शीतकालीन प्रतियोगिताओं में पूरे उत्साह के साथ भाग लिया। 60 किलोमीटर की यह 'आदि कैलाश परिक्रमा दौड़' लगभग जमाव बिंदु वाले तापमान पर सवेरे पाँच बजे झंडी दिखाकर रवाना की गई थी, जिसमें 22 राज्यों के प्रतिभागी शामिल थे। खास बात यह रही कि इस आयोजन में, जहाँ तीन साल पहले सिर्फ 2000 दर्शक आते थे, वहीं इस बार इस तीस हज़ार से ज़्यादा दर्शक जुटे थे जिससे इन साहसिक अभियानों में तेज़ी से बढ़ती

रुचि का पता चलता है।

लेह लद्दाख में आयोजित खेलो इंडिया विंटर गेम्स, 2025 और जम्मू-कश्मीर में फरवरी, 2025 में हुए स्नो गेम्स की सफलता इस यात्रा की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ रही हैं। ऐसे आयोजनों से ऊर्जा का संचार होता है तथा देश में शीतकालीन खेल आयोजित कराने की सम्भावना की ओर एथलीटों, दर्शकों और मीडिया का ध्यान आकर्षित होता है। ऑइस हॉकी, स्कीइंग और स्नोबोर्डिंग जैसे खेलों को विशिष्ट वर्ग तक सीमित न रखकर इन्हें खेलों की मुख्यधारा में जोड़ने में भी मदद मिलती है। इन खेल आयोजनों से बुनियादी ढाँचे को गतिशील बनाने, कनेक्टिविटी बेहतर बनाने और पर्यटकों के लिए अधिक अनुकूल परिवेश विकसित करने में भी सहायता मिलती है।

भारत से और आगे देखें तो हम पाते हैं कि वैश्विक मॉडल से भी काफी कुछ सीखा जा सकता है। स्विट्ज़रलैंड से जापान तक सभी देशों ने बहुत पहले से ही शीतकालीन खेलों को पर्यटन की पहचान का हिस्सा बना रखा है। *विंटर ओलम्पिक्स* इसका सबूत हैं क्योंकि इन खेलों की मेज़बानी करने वाले शहरों- इंज्ब्रुक, साल्ट लेक सिटी और प्योंगचांग को शीतकालीन खेलों के स्थायी ठिकाने के रूप में विकसित कर लिया गया है। अपने ही देश में कश्मीर का गुलमर्ग शीतकालीन समारोह या लद्दाख का हिमालयन हाई एल्टीट्यूड मैराथन सफलता के नए मानदंड बन चुके हैं।

ये मात्र स्पर्धाएं न रहकर शीतकालीन संस्कृति के आयोजन बन गए हैं जहाँ प्रतिभागी तथा दर्शक पूरे उत्साह के साथ एकत्र होते हैं।

इस समायोजन के लाभ भी स्पष्ट देखे जा सकते हैं। इससे पर्यटन का मौसम और लम्बा हो जाता है- गाइड, प्रशिक्षक और आतिथ्य जैसे क्षेत्रों में रोज़गार के विविध अवसर बनते हैं तथा पर्वतीय समुदायों के बीच उत्साह का माहौल बनता है। साथ ही, ठंडे स्थानों पर विवाह समारोह आयोजित करने जैसी कई नई शुरुआत हुई हैं। सर्दियों में पर्वतों के मनोरम नज़ारे तथा नदी के किनारे मोहक वातावरण होने से गंगा तट पर होने वाली शादियों में जाने का आनंद तब और बढ़ जाता है जब अतिथियों में उत्साह का अतिरिक्त संचार होता है।

कुल मिलाकर, हिमालय की घाटियों में होने वाला अनुभव जीवनभर के लिए यादगार बन जाता है। इस मनोहारी पृष्ठभूमि में खेल और एडवेंचर एकदम प्राकृतिक और खुशनुमा अनुभूति देते हैं। इससे एथलीटों का उत्साह आसमान छूने लगता है और आगंतुकों के साथ मिलकर वे क्षेत्रीय विकास का अहम भाग बन जाते हैं। 'आदि कैलाश रन' और 'उत्तराखंड विंटर गेम्स' के आयोजन और विस्तार से भारत में शीतकालीन पर्यटन की सम्भावनाएँ निश्चय ही बढ़ेंगी तथा विश्वभर से पर्यटक बर्फ से ढकी चोटियों की शांति और रोमांच का अनुभव करने को आकर्षित होंगे।

‘वोकल फ़ॉर लोकल’

भारतीय कला का वैश्विक प्रसार

विश्व के बड़े शीर्ष नेताओं का सम्मेलन जी20 अक्सर भू-राजनीति से आगे बढ़कर ‘सांस्कृतिक संवाद’ का मंच बन जाता है। वर्ष 2025 में दक्षिण अफ्रीका के जोहानिसबर्ग में आयोजित जी20 शिखर सम्मेलन के दौरान भारत की उपहार रणनीति ने देश के राष्ट्रीय मंत्र ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ को प्रभावी ढंग से साकार किया और कूटनीति के प्रतीक ये उपहार शिल्पकार समुदाय के लिए एक बड़ा सम्मान बन गए।

भारत सरकार की ‘वोकल फॉर लोकल’ पहल, नागरिकों को स्वदेश में निर्मित वस्तुओं को समर्थन देने के लिए प्रेरित करती है। चीजें ख़रीदते समय स्थानीय उत्पाद चुनकर हम केवल ख़रीदारी ही नहीं करते बल्कि हथकरघे से बने वस्त्र, मिट्टी की बनी वस्तुएँ (टेराकोटा) और हस्तशिल्प जैसी सदियों पुरानी कला परम्पराओं का संरक्षण भी करते हैं। लोगों से मिलने वाला यह सीधा समर्थन कारीगरों को सतत आजीविका देता है और ग्रामीण क्षेत्रों से कुशल श्रमिकों का पलायन रोकने में भी मददगार होता है। विश्व के शीर्ष नेताओं को भेंट

किया जाने वाला प्रत्येक उपहार अत्यंत सावधानी से चुना गया था जिसमें विरासत, कौशल और क्षेत्रीय पहचान की विशिष्टता थी। सोच-समझ कर चुने गए ये उपहार दोहरे उद्देश्य की पूर्ति करते हैं। एक ओर, नेताओं का सम्मान होता है और दूसरी ओर, भारत की विविध शिल्प परम्पराओं को वैश्विक मंच मिलता है जिससे स्थानीय शिल्पकला और राष्ट्रीय गौरव के बीच गहरा सम्बंध सुदृढ़ होता है।

नृत्य के देवता **नटराज** की एक कांस्य प्रतिमा दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति को भेंट की गई। नटराज का स्वरूप, हिन्दू दर्शन में एक अत्यंत गहन प्रतीक है जो सृष्टि और संहार के ब्रह्माण्डीय चक्र को दर्शाता है। यह तमिलनाडु के तंजावुर में चोल काल में आरम्भ हुई शिल्पकला का एक भव्य प्रतीक है। चोल काल की कांस्य प्रतिमाएँ अद्भुत ‘मोम ढलाई (लॉस्ट-वैक्स)’ तकनीक के लिए विख्यात हैं जो भारतीय धातुकला और कलात्मक उपलब्धियों का उत्कर्ष दर्शाती हैं।

चोल वंश के दौरान धातुकला अपने शिखर पर पहुँची। चोल कारीगर कांस्य मूर्तियाँ बनाने में निपुण थे। सामान्यतः मूर्तियाँ **मोम ढलाई तकनीक** से बनाई जाती थीं। इस प्रक्रिया में सबसे पहले मूर्ति या किसी वस्तु का मोम का मॉडल तैयार किया जाता है। तत्पश्चात् इस मॉडल को मिट्टी में लपेट कर मिट्टी में छेद किए जाते हैं। और फिर ऊपर बने छेद से पिघली हुई धातु डाली जाती है जिससे मोम पिघल जाता है और उसकी जगह गर्म धातु भर जाती है। धातु ठंडी होने के बाद मिट्टी हटाकर धातु की कृति को बढ़िया तरीक़े से पॉलिश किया जाता है।

जापान के प्रधानमंत्री को भारत की ओर से बुद्ध की चाँदी की बनी प्रतिमा

भेंट की गई थी। यह उपहार, तेलंगाना में करीमनगर की विशिष्ट चाँदी की जालीदार कला (सिल्वर फिलिग्री) का उत्कृष्ट नमूना था। इस शिल्प में, शुद्ध चाँदी की महीन तारों को मोड़ते हुए अतिसुंदर आकृतियाँ या डिजाइन बनाए जाते हैं। इसी तकनीक से निर्मित शांत बुद्ध की प्रतिमा दर्शाती है कि दुनिया भर में अध्यात्मिक महत्त्व रखने वाले रूप गढ़ने में भी यह प्राचीन कला कितनी सक्षम है।

तेलंगाना के करीमनगर में चाँदी की जालीदार कारीगरी की परम्परा, प्राचीन काल से चली आ रही है। करीमनगर की सिल्वर फिलिग्री इस क्षेत्र की विशिष्ट पहचान वाली शिल्पकला है। बारीकी से बुनी गईं ये कलाकृतियाँ वास्तव में अत्यंत आकर्षक होती हैं। यह शिल्प सदियों में विकसित हुआ है और आज भी समय की कसौटी पर खरा उतरता है। करीमनगर की सिल्वर फ़िलिग्री कला को वर्ष 2007 में भौगोलिक संकेतक (GI) टैग प्रदान किया गया था। इतिहासकारों का मानना है कि यह शिल्पकला 19वीं और 20वीं शताब्दी के दौरान विशेष रूप से लोकप्रिय हुई।

कनाडा के प्रधानमंत्री के लिए उदयपुर, राजस्थान से चाँदी के घोड़े की प्रतिकृति चुनी गई। राजस्थान की चाँदी की कारीगरी की परम्परा विश्वविख्यात है जिसमें प्रायः रेपूसे और चेज़िंग तकनीकों से सूक्ष्म और ओजपूर्ण आकृतियाँ गढ़ी जाती हैं। शक्ति, गरिमा और गतिशीलता के प्रतीक घोड़े को, दमकती चाँदी में ढालकर, राजस्थान की राजसी कला-परम्परा प्रदर्शित की गई। यह कृति केवल एक शिल्प नहीं बल्कि उस क्षेत्र की आत्मा का प्रतिनिधित्व करती है जिसकी पहचान का भव्य कलात्मकता

और वीरता से गहरा नाता है।

इन उपहारों को समग्र रूप में देखें तो यह भारत की कलात्मक विविधता का ऐसा मानचित्र प्रस्तुत करते हैं जिसे सांस्कृतिक कूटनीति का उज्ज्वल उदाहरण कहा जा सकता है। साधारण स्मृति चिह्नों से भिन्न, विशिष्ट भौगोलिक और सांस्कृतिक भूमि से जुड़ी ये कलाकृतियाँ 'शिल्पकार' को राष्ट्रीय विरासत का एक महत्त्वपूर्ण संरक्षक और अर्थव्यवस्था में आवश्यक योगदान करने वाले के रूप में मान्यता देती हैं।

संक्षेप में, कहा जा सकता है कि उपहार देना, *'वोकल फॉर लोकल'* की अवधारणा का प्रत्यक्ष रूपांतरण रहा। इसने

विश्व के सबसे प्रतिष्ठित मंच पर कारीगरों की आवाज़ को सशक्त तरीक़े से प्रस्तुत किया और वैश्विक नेताओं को संदेश दिया कि भारत की शक्ति हस्तकला परम्पराओं की अद्‌भुत विविधता में निहित है। इसने यह भी प्रमाणित किया कि स्थानीय शिल्पकला 'शिल्पकार' के हाथों सौंदर्य, विरासत और मानवीय सृजनशीलता की एक सार्वभौमिक भाषा बन जाती है जो दुनिया भर की सराहना और संरक्षण की हकदार है।

मिताली राज
भारतीय क्रिकेटर

भारतीय खेलों का स्वर्णिम माह

प्रेरणादायक उपलब्धियाँ

पिछले एक महीने में साहस, कौशल और अटूट संकल्प का ऐसा अद्भुत संगम देखने को मिला जिसने भारत की खेल पहचान को नए सिरे से परिभाषित किया है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने इन उल्लेखनीय उपलब्धियों के बारे में देश को दिए सन्देश में स्पष्ट कहा है कि खेलों में भारत की उत्कृष्टता अब कोई दूर का सपना नहीं अपितु प्रत्यक्ष वास्तविकता है और इसके केंद्र में हैं हमारी **महिला खिलाड़ी** और **दिव्यांग चैम्पियन** जिन्होंने सिद्ध कर दिया कि सच्ची ताक़त की कोई सीमा नहीं होती।

भारतीय खेलों का नया सवेरा

माननीय प्रधानमंत्री ने महिलाओं के नेतृत्व में मिली जीतों पर विशेष बल दिया जो इस बात का संकेत है कि भारत जिस दृष्टि से खेलों को देखता, सराहता और उनमें निवेश करता है उसमें ऐतिहासिक बदलाव आ रहा है। दशकों तक भारतीय खेल कथाएँ मुख्यतः पुरुष उपलब्धियों के इर्द-गिर्द ही रहीं लेकिन आज महिलाएँ केवल भागीदार ही नहीं हैं अपितु वैश्विक मंच पर झंडे गाड़ रही हैं– विश्व कप जीत रही हैं, नए कीर्तिमान बना रही हैं और करोड़ों लोगों को प्रेरित कर रही हैं।

यह बदलता परिदृश्य इस सच्चाई को दर्शाता है कि प्रतिभा किसी लिंग तक सीमित नहीं होती। प्रधानमंत्री जब अपने राष्ट्रीय सम्बोधन का एक महत्त्वपूर्ण समय आईसीसी महिला क्रिकेट विश्व कप, कबड्डी विश्व कप की जीत, और ब्लाइंड क्रिकेट विश्व कप की ऐतिहासिक सफलता को समर्पित करते हैं तो वे भारत की हर युवा बेटी को स्पष्ट सन्देश देते हैं कि तुम्हारे सपने सर्वथा उचित हैं, तुम्हारी क्षमता असीम है और तुम्हारा देश गर्व के साथ तुम्हारे साथ खड़ा है।

उत्कृष्टता परिभाषित करने वाले ऐतिहासिक पड़ाव

इस महीने मिली उपलब्धियाँ केवल जीत नहीं अपितु भारतीय खेल इतिहास का निर्णायक मोड़ हैं। हमारी महिला कबड्डी टीम की विश्व कप विजय वर्षों की मेहनत को मिला उचित सम्मान है। भारतीय संस्कृति से गहराई से जुड़े इस खेल में हमारी महिला योद्धाओं ने पूरे टूर्नामेंट के दौरान रणनीतिक कौशल, शारीरिक क्षमता और मानसिक दृढ़ता का अद्भुत प्रदर्शन किया जिससे उन्होंने मैचों के साथ-साथ करोड़ों दिल भी जीते।

विश्व मुक्केबाज़ी कप फ़ाइनल्स में भारतीय खिलाड़ियों ने शानदार 20 पदक जीते जिनमें महिला मुक्केबाज़ों का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा। हर मुक्का और हर राउंड केवल व्यक्तिगत उत्कृष्टता का प्रतीक न होकर सामूहिक प्रगति और खिलाड़ियों की एक ऐसी पीढ़ी का संकेत देता है जो महिलाओं की क्षमता के बारे में तमाम पुरानी धारणाएँ स्वीकार करने से इंकार करती है।

टोक्यो में आयोजित 'डेफ्लिम्पिक्स' में भारत ने 20 पदक अपने नाम करके अब तक का अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया जो हमारे दिव्यांग खेल समुदाय की असाधारण प्रतिभा का प्रमाण है। ये खिलाड़ी उन चुनौतियों पर पार पाते हुए उस सर्वोच्च अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मुक़ाबला करते हैं जो अनेक लोगों के लिए कल्पनातीत है, पर फिर भी यह खिलाड़ी तिरंगे में लिपटे पोडियम पर खड़े होकर ओलिम्पिक की सच्ची भावना साकार करते हैं।

अजेय चैम्पियनः एक ऐतिहासिक गाथा

सबसे प्रेरक कहानी शायद हमारी महिला ब्लाइंड क्रिकेट टीम की है जिसकी विश्व कप में अपराजेय जीत खेल की उत्कृष्टता से कहीं बढ़कर है। ये वे खिलाड़ी हैं जो देख नहीं सकतीं, फिर भी असाधारण दृष्टि रखती हैं। इन्होंने खेल के लिए अति आवश्यक, स्प्लिट-सेकंड टाइमिंग, मैदान में जगह की समझ और समन्वय में कमाल की महारत हासिल की है। इनकी अजेय यात्रा दिव्यांगता के बारे में हर पूर्वधारणा को खंडित करके सिद्ध करती है कि सीमाएँ मन में होती हैं, आत्मा में नहीं। जब प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अपने आवास पर इस टीम से मुलाक़ात की तो उन्होंने केवल चैम्पियनों को बधाई नहीं दी बल्कि मानव सम्भावनाओं की सीमाओं को विस्तार देने वाली नायिकाओं का सम्मान किया है।

राष्ट्रीय गौरव व युवा आकांक्षाओं को नई ऊर्जा

इन जीतों का प्रभाव केवल खेल के मैदान तक सीमित नहीं रहता, यह राष्ट्रीय चेतना का हिस्सा बन जाती हैं। इनके क़िस्से स्कूलों में सुनाए जाते हैं, घर-घर में चर्चा का विषय बनते हैं और मोहल्लों में इनकी ख़ुशी मनाई जाती है। जब किसी दूरदराज़ गाँव की बच्ची महिलाओं को विश्व कप ट्रॉफी उठाते देखती है, या कोई दिव्यांग बच्चा ब्लाइंड क्रिकेटरों को दुनिया जीतते देखता है, तो उसकी सम्भावनाओं का आकाश भी विस्तार पाता है और अपनी क्षमता को लेकर उसकी समझ बदल जाती है।

राष्ट्रीय गौरव केवल आर्थिक सूचकांकों से नहीं मिलता, यह तो हम सब की साझा उपलब्धियों से मिलता है जो हमें एकजुट करती हैं। खेलों में मिली उपलब्धियाँ सामूहिक आनंद देती हैं जब 1.4 अरब भारतीय एक साथ इनका जश्न मनाते हैं। युवाओं के लिए विशेषकर ये उपलब्धियाँ प्रेरक होती हैं। ये हमें सिखाती हैं कि उत्कृष्टता के प्रति समर्पण हो तो हर बाधा पार की जा सकती है और भारत स्पर्धाओं के किसी भी वैश्विक मंच पर जीत हासिल कर सकता है।

मूलभूत ढांचा, निवेश और समावेशी दृष्टि

ऐसी निरंतर सफलताएँ संयोग से नहीं मिलतीं। यह खेलों के बुनियादी ढाँचे में सोच-समझ कर किए गए निवेश, समग्र प्रशिक्षण कार्यक्रमों और हर जगह प्रतिभा की पहचान कर सकने वाली समावेशी दृष्टि से ही सम्भव है। उन्नत खेल अकादमियों से लेकर महिलाओं और दिव्यांग खिलाड़ियों के लिए विशेष

योजनाओं जैसी सरकारी पहल के स्पष्ट परिणाम अब मिलने लगे हैं।

'डेफ्लिम्पिक्स' और विश्व मुक्केबाज़ी कप फ़ाइनल में 20–20 पदकों की उपलब्धि दर्शाती है कि भारत की खेल सफलता अब यदा-कदा नहीं बल्कि सुनियोजित विकास का परिणाम है। बेहतर सुविधाओं, प्रशिक्षित कोच, खेल विज्ञान का समावेश और वित्तीय सहयोग मिलने से खिलाड़ी अपना खेल निरंतर निखारने पर पूरा ध्यान देने में सक्षम हुए हैं।

संसाधन का उपयोग करते हुए सफलता का मार्ग

ये उपलब्धियाँ एक अभूतपूर्व अवसर लेकर आई हैं। स्कूल, कॉलेज और समुदायों को चाहिए कि वे विजयी खिलाड़ियों को सबके सामने लाएं, उनके साथ संवाद आयोजित करें और नए उभरते खिलाड़ियों के लिए रास्ता बनाएं। वैश्विक मंच पर महिला खिलाड़ियों को मिली कामयाबी देखकर उन महिलाओं की शारीरिक बाधाएँ टूटती हैं जिन्हें पीढ़ियों से हतोत्साहित किया जाता रहा है। दिव्यांग खिलाड़ियों की जीत अन्य दिव्यांगों को प्रेरणा देती है कि खेल केवल मनोरंजन नहीं बल्कि उत्कृष्टता, पहचान और देश के लिए कुछ कर गुज़रने का मार्ग भी है।

भविष्य का मार्ग

इस शानदार खेल माह का जश्न मनाते हुए हमें इसे अंत नहीं 'आरम्भ' मानना चाहिए। इन चैम्पियनों ने मार्ग प्रकाशित किया है; हमारा दायित्व बनता है कि अनगिनत अन्य खिलाड़ी इसका अनुसरण कर सकें। विश्व की दृष्टि हम पर है। भारत उन्नति के पथ पर निरंतर अग्रसर है। और हमारे चैम्पियन- महिला, पुरुष, दिव्यांग हर खेल में सम्भावनाओं की नई परिभाषा गढ़ रहे हैं।

भारत में एंड्योरेंस स्पोर्ट्स का उदय

आयरनमैन संस्कृति और युवा सहभागिता

भारत अपनी फ़िटनेस यात्रा के एक नए दौर से गुज़र रहा है और इस बदलाव की वजह है एंड्योरेंस स्पोर्ट्स के प्रति युवाओं का बढ़ता जुनून। मैराथन, लम्बी दूरी की साइक्लिंग, ओपन वॉटर स्विमिंग और ट्राइथ्लॉन जैसे खेल जिन्हें पहले कुछ ही लोगों तक सीमित माना जाता था, वही अब भारत के उन हज़ारों युवाओं को आकर्षित कर रहे हैं जो अपनी शारीरिक सीमाएँ परखना चाहते हैं। इस बढ़ती रूचि की विशेषता यह है कि इस चलन में छात्र, नौकरीपेशा लोग, गृहिणियाँ और पहली पीढ़ी के एथलीट, सभी में इन दमखम वाले खेलों में शामिल होने का उत्साह एक जैसा है।

इस वर्ष नवम्बर में आयोजित 'आयरनमैन 70.3 गोवा' में यह रुझान स्पष्ट दिखाई दिया। इस आयोजन से गोआ का मनमोहक तट शारीरिक सहनशक्ति और आत्मविश्वास का जीता-जागता उत्सव बन गया। प्रतिभागियों ने 'एंड्योरेंस' को केवल खेल के रूप में नहीं अपितु ऐसी जीवनशैली के रूप में अपनाया है जो निरंतरता, धैर्य और दृढ़ता का पाठ सिखाती है। ये ऐसे गुण हैं जिनमें आज का भारत प्रतिध्वनित होता है।

ऐसे आयोजनों के बढ़ते चलन में फ़िट इंडिया मूवमेंट का व्यापक प्रभाव भी दिखाई देता है जिसने फ़िटनेस को अपनी दिनचर्या का नियमित हिस्सा बनाने के लिए लोगों को प्रेरित किया है। मॉर्निंग रनिंग ग्रूप्स, वीकेंड साइक्लिंग कम्युनिटी और स्कूल-स्तर के एंड्योरेंस कैम्प साबित करते हैं कि फ़िटनेस किस तेज़ी से बड़े पैमाने पर एक आदत बन रही है।

यही रुझान देखते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी एंड्योरेंस कार्यक्रमों में बढ़ती युवा भागीदारी की सराहना करते हुए, इसे भारत में फ़िटनेस के प्रति बढ़ती जागरूकता और 'फ़िट इंडिया' की भावना का प्रतीक बताया है।

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

कार्रवाई के लिए आह्वान

१२८वाँ संस्करण

मेरा आप सभी से आग्रह है कि आप काशी-तमिल संगमम् का हिस्सा ज़रूर बनें।

मैं आप सभी से, विशेषकर **military history** में रुचि रखने वाले लोगों से आग्रह करता हूँ कि आप इन **museums** को देखने जरूर जाएँ।

मैं आप सभी से हमेशा **'vocal for local'** के मंत्र को साथ लेकर चलने की बात करता हूँ।

मैं आपको फिर याद दिलाऊँगा, **'vocal for local'** का मंत्र- याद रखें, खरीदें वही जो देश में बना हो, बेचें वही जिसमें किसी देशवासी की मेहनत लगी हो।

Bhupender Yadav
@byadavbjp

Show translation
प्राकृतिक खेती के क्षेत्र में युवा और उच्च शिक्षा प्राप्त लोगों का आना एक शुभ संकेत है...

#MannKiBaat

Dr.L.Murugan
@DrLMurugan

In his latest Mann Ki Baat episode, our Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi ji highlighted the upcoming Kashi Tamil Sangamam. Starting from 2nd December in Namo Ghat, Kashi, the fourth Kashi Tamil Sangamam is underscored with the theme of "Tamil Karakalam", i.e., "Learn Tamil". Over the past years, this Sangamam has gone on to be one of the most important linguistic and cultural confluences that celebrates the richness of the Tamil language. As this event continues to foster cultural exchange, it also emphasises our Hon'ble PM's vision of "Ek Bharat Shreshtha Bharat".

#MannKiBaat

Dilip Saikia 🇮🇳
@DilipSaikia4Bjp

Delighted to attend the 128th edition of Hon'ble PM Shri @narendramodi Ji's 'Mann Ki Baat' at Booth 175, Rajdhani Mandal, Dispur LAC.

His inspiring words on 'Vocal for Local' and India's achievements in sports, science & technology motivate us.

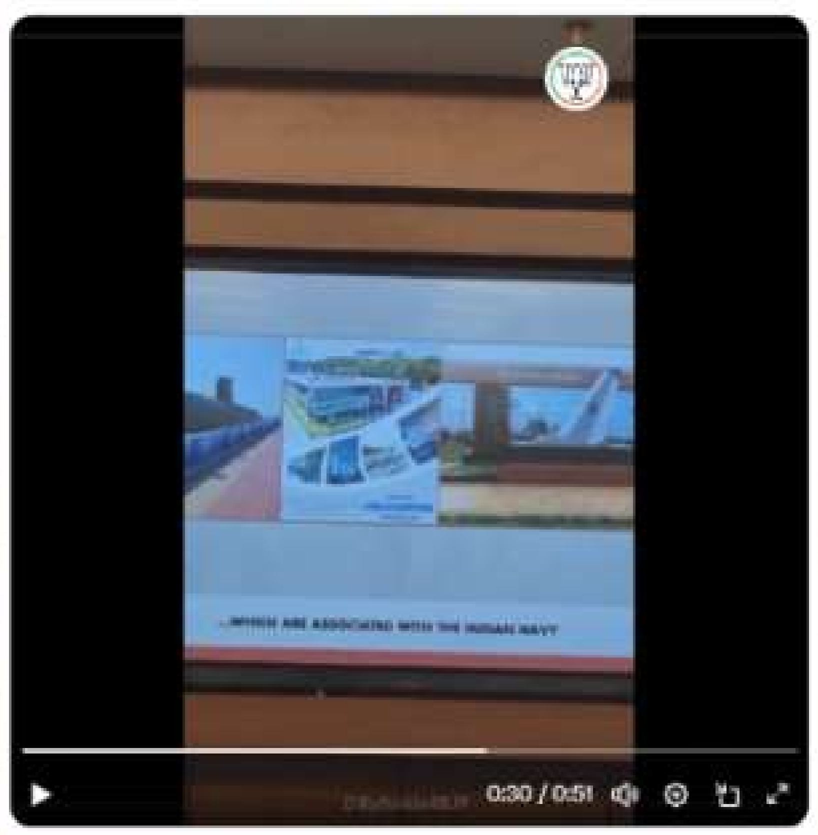

Hardeep Singh Puri
@HardeepSPuri

A nation seeking inspiration from the Bhagavad Gita while aspiring to reach Mars.

Yet another stimulating, evocative and deeply engaging edition of Mann Ki Baat.

From achievements of fellow citizens to keep our vivid culture and myriad traditions alive, to the scientific and technological innovations which are enabling giant leaps into the future- all are beautifully presented by PM Sh @narendramodi Ji in this program, which is a perfect showcase of New India!

#MannKiBaat
@PMOIndia @mannkibaat @narendramodi_in @themodistory @modiarchive @PIB_India @isro @AIIA_NDelhi @moayush @PetroleumMin @MEAIndia @MinOfCultureGoI

Harsh Sanghavi
@sanghavIharsh

Show translation
भारत की महान संस्कृति में शांति और करुणा का भाव सर्वोपरि रहा है। जाम साहब, महाराजा दिग्विजय सिंह जी ने जो महान कार्य किया, वो आज भी हमें प्रेरणा देता है।

#MannKiBaat

Keya Ghosh
@keyakahe

Noone can connect with Gen Z like @narendramodi ji does. It was heartening to know the excitement displayed by them in a tech display.
#MannKiBaat

N. Biren Singh
@NBirenSingh

Listened to Mann Ki Baat today along with the dedicated karyakartas of Heingang BJP Mandal at my residence.

Hon'ble PM @narendramodi ji's words continue to inspire us to work with greater commitment for the welfare of our people and the development of our State.

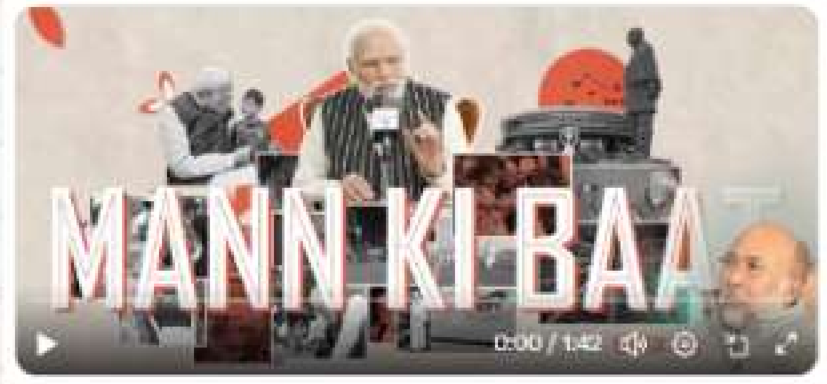

Namrata S. Kumar
@Namrata_SKumar

1. It is a great honour and pride for the artists from the Bharat Centre in Latvia and all those who joined from Estonia, Lithuania, and Algeria, that Prime Minister Shri @narendramodi ji mentioned, in his 128th #MannKiBaat broadcast on 30 November 2025, the recently held Gita Mahotsav festival, organized under the patronage of the Embassy of India in Riga.

#mannkibaat2025

@PMOIndia @mygovindia @MIB_India @MEAIndia @IndianDiplomacy @Latvian_MFA @mannkibaat @DDNewslive @airnewsalerts @letanewsen @TVNET_zinas @Studio_BHARATA

Shivraj Singh Chouhan
@ChouhanShivraj

Show translation
2 दिसंबर से काशी के नमो घाट पर चौथा काशी-तमिल संगमम शुरू हो रहा है।

इस बार के काशी-तमिल संगमम की थीम बहुत ही रोचक है – Learn Tamil – तमिल करकलम्

काशी-तमिल संगमम उन सभी लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण मंच बन गया है, जिन्हें तमिल भाषा से लगाव है।

- आदरणीय प्रधानमंत्री श्री @narendramodi जी

#MannKiBaat

Piyush Goyal
@PiyushGoyal

Show translation
'Vocal for Local' की भावना को देश के करोड़ों लोगों ने अपने जीवन का हिस्सा बना लिया है। इस बार युवाओं ने भी 'Vocal for Local' अभियान को गति दी।

#MannKiBaat

Pradeep Bhandari(प्रदीप भंडारी) 🇮🇳
@pradip103

PM @narendramodi ji in Mann ki Baat:

India is creating new milestones in honey production — rising from 76,000 MT to an impressive 1,50,000 MT and our honey exports have also grown threefold.

#MannKiBaat

Nirmala Sitharaman
@nsitharaman

Show translation
டிசம்பர் 2, செவ்வாய் முதல் காசி தமிழ் சங்கமத்தின் 4ஆம் பதிப்பு தொடங்கவுள்ளது. "ஒரே பாரதம் உன்னத பாரதம்" என்ற எண்ணத்திற்கு ஏற்ப #தமிழ்கற்கலாம் எனும் முயற்சியும் எடுக்கப்பட்டுள்ளது. @airnewsalerts
இன்று தனது "மனதின் குரல்" ஒலிபரப்பில் பிரதமர் திரு @narendramodi அவர்கள்
"தமிழ் கலாசாரம் உயர்வானது
தமிழ் மொழி உயர்வானது
தமிழ் இந்தியாவின் பெருமிதம்" என்று கூறினார்.

Narendra Modi @narendramodi · Nov 30
Kashi looks forward to hosting the Kashi Tamil Sangamam!

#MannKiBaat

Suvendu Adhikari @SuvenduWB

Tuned in to Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi Ji's Mann Ki Baat along with @BJP4Bengal Karyakartas & Supporters at Nandigram.

Hon'ble PM described November as a month brimming with inspiration and innovation across aviation, defence, space, tourism, and culture. He highlighted India's leap in aviation self-reliance with the new Maintenance, Repair, and Overhaul (MRO) facilities, like the world-class one in Hyderabad, reducing dependency on foreign maintenance.

PM Modi celebrated the Indian Navy's induction of INS Mahe an indigenously built anti-submarine warfare corvett, honoring the historic Mahe region and boosting our maritime strength. In space, he praised Skyroot Aerospace's Infinity Campus as a game-changer for private sector innovation, and lauded Gen-Z's enthusiasm in ISRO's drone competition, showcasing youth power driving India's cosmic ambitions.

Turning to agriculture, the PM announced a historic milestone: India's food grain production hitting a record 357 million tonnes this year, a 100 million tonne surge over the last decade, while urging the embrace of natural farming traditions.

@BJP4India @BJP4Bengal

Taranga Gogoi @tarangagogoi

Hon'ble Prime Minister Shri @narendramodi dangoriya, in today's "Mann Ki Baat" program, shared inspiring and positive messages from various organizations and individuals across the country who are contributing to nation-building.

Heartfelt gratitude to the Hon'ble Prime Minister for motivating and encouraging those dedicated to building a healthy and positive society.

Rohan Khaunte @RohanKhaunte

128th #MannKiBaat saw PMModiJi reflect on Constitution Day, 150 Years of Vande Mataram & Hoisting of DharmaDhwaja in Ayodhya while praising the Agriculture Sector on record production of 357 tonnes foodgrains and Honey Production crossing 1.5 Lakh Metric tonnes while expressing Joy in Bharat being selected to host the next Commonwealth Games. PMModiJi enthused Youth to strive for Excellence and lead the country towards ViksitBharat-2047 and recalled the Greatness of Maharaja Jam Sahab who gave asylum to Jews escaping Nazi atrocities. PMModiJi praised the growing interest of Youth in Natural Farming in Southern States and welcomed the induction of INS Mahe Anti Submarine Watercraft into Bharatiya NauSena while recalling the Bhutan & G20 visits and eulogising promotion of Winter Tourism activities by Uttarakhand and called to adopt Vocal for Local to promote our handicrafts the world over. PMModiJi made a special mention of Ironman 70.3 Event held in Goa and called upon everyone to adopt Endurance Sports towards #FitIndia.

Tejasvi Surya @Tejasvi_Surya

Listen to this segment of PM Shri @narendramodi Ji's Mann Ki Baat, where he stresses the importance of fitness and active living and cites events like Ironman 70.3 Goa as examples of how sports are inspiring young Indians to make health a priority.

Having had the opportunity to participate in the Ironman Triathlon in the past, I've personally seen how physical fitness builds discipline, resilience and confidence. I hope more young people are encouraged to take up regular exercise - not for competition, but for their own well-being.

PM Narendra Modi Ji's push for a Fit India is really creating momentum for events like this. His support for endurance sports has encouraged many athletes and inspired many more to take part.

This is how a strong sporting culture can truly grow in a country.

Kudos to PM Narendra Modi Ji for driving this change.

@IRONMANtri

Vandana Gupta @im_vandy

Hon'ble Prime Minister Shri Narendra Modi ji expressed his deep affection for Uttarakhand in today's 'Mann Ki Baat' program. He highlighted the state's unique identity, focusing on winter tourism, adventure sports, wedding destinations, and growing tourism potential.

The Prime Minister noted Uttarakhand's popularity is increasing, with events like the Adi Kailash Ultra Marathon and upcoming Winter Games boosting sports and putting the state on the global tourism map. He mentioned that Adi Kailash saw a rise in visitors from 2,000 to 30,000 in three years, showcasing Uttarakhand's growing appeal.

He also emphasized Uttarakhand's emergence as a wedding destination, citing its natural beauty, tranquility, and cultural richness, which will boost local employment and the economy.

The people of Uttarakhand express gratitude to the Prime Minister for highlighting the state's tourism growth and potential. His guidance will pave the way for Uttarakhand's development in tourism and more.

#uttarakhandat25withpmmodi @PMOIndia

चर्चा • रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' में बोले प्रधानमंत्री

युवाओं की लगन ही विकसित भारत की सबसे बड़ी ताकत: पीएम मोदी

भास्कर न्यूज | नई दिल्ली

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को मासिक रेडियो कार्यक्रम 'मन की बात' को संबोधित किया। पीएम ने देश के युवाओं की लगन और समर्पण को विकसित भारत की सबसे बड़ी ताकत बताया। कार्यक्रम के 128वें एपिसोड में पीएम ने कहा कि ... देश ने अंतरिक्ष, मैन्युफैक्चरिंग और खेलों जैसे कई क्षेत्रों में बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं, जिनमें युवाओं की अहम भूमिका रही है। उन्होंने नवंबर महीने की कुछ प्रेरणादायक घटनाओं का जिक्र किया। इनमें वंदे मातरम की 150वीं वर्षगांठ, संसद के सेंट्रल हॉल में संविधान दिवस का आयोजन और अयोध्या में राम मंदिर के ऊपर धर्मध्वज फहराया जाना शामिल है। पीएम मोदी ने कहा कि भारत ने कृषि क्षेत्र में बड़ी सफलता हासिल की है। आज हम 357 मिलियन टन खाद्यान्न उत्पादन कर ऐतिहासिक रिकॉर्ड बना चुके हैं। 10 साल पहले की तुलना में यह 100 मिलियन टन की बढ़ोतरी है।

स्पेस और टेक्नोलॉजी में युवाओं की भागीदारी: प्रधानमंत्री ने हैदराबाद में दुनिया की सबसे बड़ी लीप इंजन एमआरओ फैसिलिटी के उद्घाटन और आईएनएस माहे को भारतीय नौसेना में शामिल किए जाने की भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हाल ही में स्काईरूट के इनफिनिटी कैंपस ने भारत के स्पेस इकोसिस्टम को नई ऊर्जा दी है। यह भारत की नई सोच, इनोवेशन और युवाशक्ति का प्रतीक है।

इसरो की ड्रोन प्रतियोगिता का जिक्र: पीएम मोदी ने इसरो द्वारा आयोजित अनोखी ड्रोन प्रतियोगिता का भी तारीफ की। उन्होंने कहा कि इसमें देश के युवा मंगल ग्रह जैसे हालात में ड्रोन उड़ाने की कोशिश कर रहे थे। इन युवाओं ने बिना जीपीएस के सिर्फ कैमरा और इनबिल्ट सॉफ्टवेयर की मदद से ड्रोन उड़ाने की कोशिश की और कई बार असफल होने के बाद आखिरकार सफलता पाई।

चंद्रयान-2 से चंद्रयान-3 तक की सीख: प्रधानमंत्री ने कहा कि जैसे इसरो के वैज्ञानिक चंद्रयान-2 की असफलता के बाद निराश हुए थे, लेकिन उसी अनुभव से सीखकर चंद्रयान-3 को सफल बनाया गया, वैसे ही युवाओं में भी वही आत्मविश्वास और जज्बा दिखता है। उन्होंने कहा कि जब भी मैं हमारे युवाओं की लगन और वैज्ञानिकों की प्रतिबद्धता देखता हूं, तो मेरा मन गर्व और उत्साह से भर जाता है।

मन की बात में बोले प्रधानमंत्री मोदी

युवाओं की लगन 'विकसित भारत' की बड़ी शक्ति

नई दिल्ली, 30 नवम्बर (एजेंसियां)। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को युवाओं की लगन को विकसित भारत की बड़ी शक्ति बताते हुए कहा कि यदि मन में लगन हो, सामूहिक शक्ति पर टीम की तरह काम करने पर विश्वास हो, गिरकर फिर से उठ खड़े होने का साहस हो, तो कठिन-से-कठिन काम में भी सफलता जरूर मिलती है।

देश के वैज्ञानिकों ने चंद्रयान-3 की सफलता की कहानी लिखी

श्री मोदी ने अपने मासिक रेडियो कार्यक्रम मन की बात में एक वीडियो का जिक्र किया जिसमें विभिन्न टीमें भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा आयोजित ड्रोन प्रतियोगिता में मंगल जैसी परिस्थितियों में ड्रोन उड़ाने का प्रयास कर रही थीं।

एक समय था जब बिना सैटेलाइट और जीपीएस सिस्टम के नाविक समंदर की लहरों का सामना करते हुए तय स्थान पर पहुंच जाते थे। अब समंदर से आगे बढ़कर दुनिया के देश अंतरिक्ष की अनंत ऊंचाई को नाप रहे हैं। : नरेन्द्र मोदी

उन्होंने कहा कि एक समय था जब बिना सैटेलाइट और जीपीएस सिस्टम के नाविक समंदर की लहरों का सामना करते हुए तय स्थान पर पहुंच जाते थे। अब समंदर से आगे बढ़कर दुनिया के देश अंतरिक्ष की अनंत ऊंचाई को नाप रहे हैं।

उन्होंने कहा कि प्रतियोगिता में जब नयी पीढ़ी के युवाओं की टीमें ड्रोन उड़ा रही थीं तो ड्रोन उड़ते थे, कुछ पल संतुलन में रहते थे, फिर अचानक जमीन पर गिर पड़ते थे। ड्रोन को अपने कैमरे और अपने ही अंदर के सॉफ्टवेयर के सहारे उड़ना था। उसे जमीन के पैटर्न पहचानने थे, ऊंचाई मापनी थी, बाधाएं समझनी थी, और खुद ही सुरक्षित उतरने का रास्ता ढूंढना था।

ଯୁବବର୍ଗଙ୍କ ତ୍ୟାଗ ବିକଶିତ ଭାରତର ସବୁଠୁ ବଡ଼ ଶକ୍ତି

ପ୍ରଧାନମନ୍ତ୍ରୀଙ୍କ ମନ୍ କି ବାତ୍

பாரதத்தின் மகத்தான வலிமைக்கு இளைஞர்களே காரணம்

காசி தமிழ் சங்கமத்தில் தமிழ் கற்றுக்கொள்ளுங்கள்

மன் கீ பாத் உரையில் பிரதமர் மோடி அறிவுறுத்தல்

'मन की बात': प्रधानमंत्री ने सर्दियों में हिमालय की वादियों का अनुभव लेने का आग्रह किया

देहरादून : प्रधानमंत्री नेरन्द्र मोदी ने रविवार को अपने 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम में उत्तराखंड के शीतकालीन पर्यटन का जिक्र किया और देशवासियों से सर्दियों में हिमालय की वादियों का अनुभव लेने का आग्रह किया। प्रधानमंत्री ने अपने कार्यक्रम में करीब ढाई मिनट का समय उत्तराखंड को समर्पित करते हुए राज्य में शीतकालीन पर्यटन, साहसिक खेलों (एडवेंचर स्पोर्ट) और विवाह गंतव्य के रूप में प्रदेश की संभावनाओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा, इन दिनों उत्तराखंड का शीतकालीन पर्यटन लोगों को बहुत आकर्षित कर रहा है। सर्दियों के मौसम में औली,

मुनस्यारी, चकराता, चोपता जैसी जगहें खूब लोकप्रिय हो रही हैं। मोदी ने कुछ सप्ताह पहले पिथौरागढ़ में साढ़े 14 हजार फुट की ऊंचाई पर स्थित आदि कैलाश में राज्य की पहली 'हाई ऑल्टिट्यूड अल्ट्रा रन मैराथन' का भी जिक्र किया और कहा कि सुबह पांच बजे कड़कड़ाती ठंड के बावजूद देशभर के 18 राज्यों से 750 से अधिक एथलीट ने 60 किलोमीटर लंबी मैराथन में उत्साह से भाग लिया। उन्होंने कहा कि तीन साल पहले तक आदि कैलाश की यात्रा पर प्रतिवर्ष मात्र दो हजार लोग ही आते थे लेकिन अब यह संख्या 30 हजार से अधिक हो गयी है। प्रधानमंत्री ने उत्तराखंड में बढ़ती पर्यटन आधारभूत सुविधाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि उत्तराखंड ने शीतकालीन पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए कनेक्टिविटी और बुनियादी ढांचे पर विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया है। मोदी ने कहा कि सर्दियों में सुनहरी धूप और पहाड़ों से उतरते कोहरे के बीच उत्तराखंड विवाह गंतव्य के रूप में भी लोकप्रिय हो रहा है और खासकर गंगा के किनारे खूब विवाह हो रहे हैं। प्रधानमंत्री ने देशवासियों से कहा, सर्दियों के दिनों में हिमालय की वादियां ऐसे अनुभव का हिस्सा बन जाती हैं जो जीवन भर साथ रहता है। अगर आप इन सर्दियों में कहीं जाने का विचार कर रहे हैं तो हिमालय की वादियों का विकल्प जरूर रखिए।

भारत के युवाओं की लगन 'विकसित भारत' की सबसे बड़ी शक्ति है: मोदी

नयी दिल्ली : प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने रविवार को अंतरिक्ष विज्ञान से लेकर कृषि तक विभिन्न क्षेत्रों में हाल की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत के युवाओं की लगन 'विकसित भारत' की सबसे बड़ी शक्ति है। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने मासिक 'मन की बात' रेडियो संबोधन में नवंबर माह की प्रेरणादायक घटनाओं में 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूरे होने, सेंट्रल हॉल में संविधान दिवस समारोह और अयोध्या में राम मंदिर पर धर्मध्वजा के आरोहण को सूचीबद्ध किया।

■ മൻ കി ബാത്തിൽ പ്രധാനമന്ത്രി

കാർഷികമേഖലയിൽ ചരിത്രനേട്ടം; ഭക്ഷ്യധാന്യ ഉത്പാദനം 357 ദശലക്ഷം ടൺ

तरुणांचे समर्पण विकसित भारताची ताकद

'मन की बात'मध्ये पंतप्रधानांचे प्रतिपादन

ସାମ୍ପ୍ରତିକ ବିକାଶ ଭାରତର ନୂତନ ଚିନ୍ତାଧାରାକୁ ପ୍ରତିଫଳିତ କରୁଛି

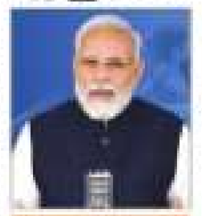

मन की बात : आपले तरुण 'विकसित भारताची' सर्वात मोठी ताकद -मोदी

PM highlights Andaman's Samudrika Naval Marine Museum in 'Mann Ki Baat'

PTI

"For those interested in Navy-related tourism, there are many places in our country where they can learn a lot. The Samudrika Naval Marine Museum in Sri Vijaya Puram, formerly known as Port Blair, is known for showcasing the rich history of the region."

(Prime Minister Narendra Modi).

Energy of young India driving triumphs in various fields: PM

Modi Urges Citizens To Learn Tamil

ಭಾರತದಲ್ಲಿ ಜೇನು ಉತ್ಪಾದನೆ ದ್ವಿಗುಣ: ಮನ್ ಕಿ ಬಾತ್‌ನಲ್ಲಿ ಮೋದಿ

ತುಮಕೂರಿನ 'ಶಿವಗಂಗಾ ಕಲಾಂಜಿಯ'

ಪುತ್ತೂರಿನ ಜೇನು

उत्तराखंड में विंटर टूरिज्म तेजी से बन रहा पसंदीदा विकल्प, पर्यटक हो रहे आकर्षित

जब चारों ओर विनाश का माहौल था तब भारत ने दी प्रेरणा

PM's Mann ki Baat: India has great winter tourism potential

'Mann Ki Baat' celebrates national pride & cultural heritage

New Delhi

IN the 128th episode of his monthly radio address Mann Ki Baat, Prime Minister Narendra Modi on Sunday reflected on the many sources of inspiration India experienced in November, weaving together themes of unity, progress, and cultural richness.

Modi began by recalling key national events, including the Constitution Day program at the Central Hall, the 150th anniversary celebrations of the national song Vande Mataram, the hoisting of the Dharmadhwaja flag at the Ram Mandir in Ayodhya, and the inauguration of the Panchajanya Memorial at Jyotisar in Kurukshetra—symbols of India's enduring heritage and shared resolve.

"The month of November brought along many inspirations. Just a few days ago, on the 26th of November, a special program was organized in the Central Hall on 'Constitution Day.' The 150th anniversary of Vande Mataram marked a grand beginning to nationwide programs. On the25th of November, the Dharmadhwaja was hoisted at the Ram Mandir in Ayodhya. On the same day, the Panchajanya Memorial was inaugurated at Jyotisar in Kurukshetra," he said.

The PM praised India's strides in science and technology, spotlighting the inauguration of the world's largest aircraft engine maintenance facility in Hyderabad, the induction of INS Mahe into the Indian Navy, and the launch of Skyroot's Infinity Campus, which exemplify the country's youthful innovation and entrepreneurial spirit. "Our progress is driven by the dedication of our youth, who are propelling India towards self-reliance and global leadership," he said. Agriculture received special mention with the Prime Minister announcing a historic record of 357 million tonnes of food grain production—an increase of 100 million tonnes in the past decade. "The country has also achieved a major milestone in the agricultural sector. India has set a historic record with food grain production of 357 million tonnes. Three hundred and fifty-seven milliontonnes! Compared to 10 years ago, India's food grain production has increased by a 100 million tonnes," he lauded.

He also celebrated India's sporting triumphs, including hosting the Commonwealth Games and landmark victories by the women's cricket and boxing teams, viewing these as shared victories that unite the nation. "India has also accomplished glory in the world of sports. Just a few days ago, India was declared as the host of the Commonwealth Games. These achievements belong to the country," he said.

Highlighting the youth innovation and nature's sweetness the Prime Minister reflected on the power of dedication, teamwork, and resilience, drawing parallels from India's space journey. He recalled how sailors navigated oceans without GPS, and today, young innovators in India are pushing boundaries by flying drones in Mars-like conditions without GPS support, relying solely on cameras and onboard software.

PM Modi praised a team from Pune who, despite repeated failures, succeeded in flying their drone in such challenging environments, likening their perseverance to the scientists behind Chandrayaan-3's triumphant lunar landing after Chandrayaan-2's setback. Modi's admiration for India's youth and scientists was palpable: "Every time I see their dedication and commitment, my heart fills with enthusiasm. This spirit is one of the greatest strengths of Viksit Bharat."

From Women's ODI WC to Deaflympics

PM Modi highlights India's historic sporting success in 'Mann Ki Baat'

ਨੌਜਵਾਨ 'ਵਿਕਸਿਤ ਭਾਰਤ' ਦੀ ਸਭ ਤੋਂ ਵੱਡੀ ਤਾਕਤ: ਮੋਦੀ

'ವಿಕಸಿತ ಭಾರತಕ್ಕೆ ಯುವಶಕ್ತಿಯ ಸಮರ್ಪಣೆ'

'ಮನ್ ಕೀ ಬಾತ್'ನಲ್ಲಿ ಪ್ರಧಾನಿ ಮೋದಿ ಅಭಿಮತ | ಕೃಷಿ, ಕ್ರೀಡೆ, ವಿಜ್ಞಾನ ಕ್ಷೇತ್ರದ ಸಾಧನೆಗೆ ಮೆಚ್ಚುಗೆ

ಪುತ್ತೂರು, ತುಮಕೂರು ಜೇನುಕೃಷಿಗೆ ಮೆಚ್ಚುಗೆ

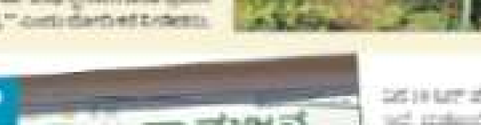

asianet newsable

PM Modi discusses 'Fit India Sunday on Cycle' in Mann Ki Baat episode

देवभूमि Dialogue

मन की बात कार्यक्रम में बोले PM मोदी, उत्तराखंड विंटर टूरिज्म का बेस्ट डेस्टिनेशन, होमस्टे, डेस्टिनेशन वेडिंग को भी सराहा

ETV بھارت

پی ایم مودی نے من کی بات میں رامبن ضلع کے سولائی ہنی اور بھدرواہ کے راجما کو جی آئی ٹیگ ملنے کو بڑی کامیابی قرار دے دیا

THE FREE PRESS JOURNAL

PM Modi Hails Uttarakhand As India's Best Wedding Destination For Winter: Here's What Makes It So Special

Hindustan Times

Mann Ki Baat: PM shares his 'Mahabharata Anubhav Kendra' experience with the nation

हिन्दुस्तान

मन की बात में पीएम ने जनभागीदारी और राष्ट्रनिर्माण पर दिया संदेश

IANS live

Fit India programme creating greater fitness awareness: PM Modi

millenniumpost

Dedication of India's youth greatest strength of 'Viksit Bharat': PM Modi

SOCIAL NEWS XYZ

'Belong to nation and countrymen': PM Modi highlights India's key Nov achievements in 'Mann Ki Baat'

THE HINDU

मन की बात कार्यक्रम में बोले PM मोदी, उत्तराखंड विंटर टूरिज्म का बेस्ट डेस्टिनेशन, होमस्टे, डेस्टिनेशन वेडिंग को भी सराहा

The Indian EXPRESS

Ahead of Kashi-Tamil Sangamam, PM Modi hails cultural unity on Mann ki Baat

The Tribune

PM Modi shares experience of Kurukshetra's Mahabharata kendra

THE TIMES OF INDIA

Mann Ki Baat: PM Modi says November brought many inspirations; mentions Hyderabad's MRO facility

मन की बात

के सभी संस्करणों को पढ़ने के लिए
QR कोड को स्कैन करें।

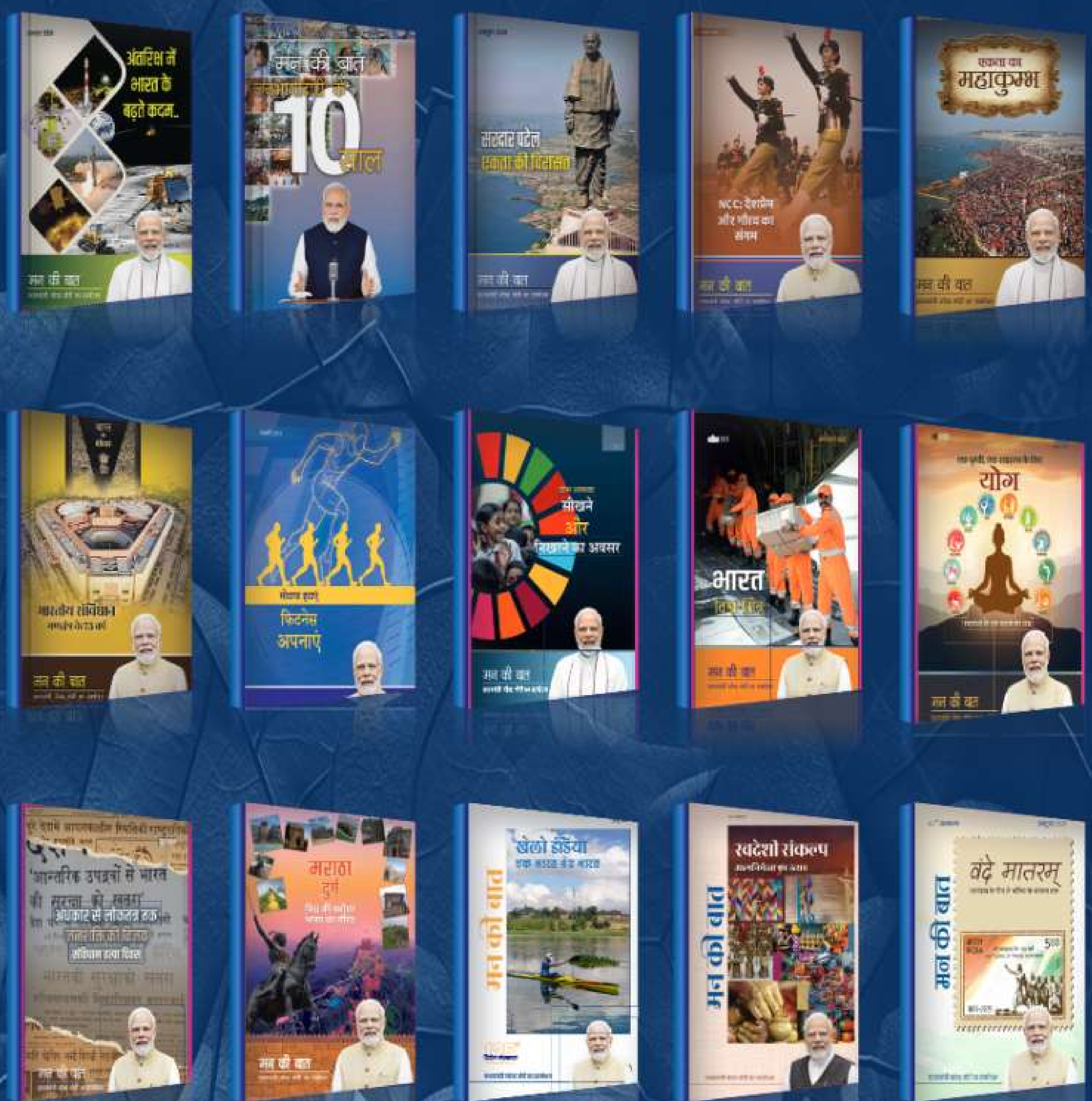

आपकी प्रतिक्रिया और सुझाव हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं! हमें इस ईमेल एड्रेस पर लिखें : mkb-mib@gov.in

इस महीने की शुरुआत भारतीय महिला टीम द्वारा आईसीसी महिला विश्व कप जीतने से हुई। लेकिन उसके बाद भी मैदान पर और ज्यादा action देखने को मिला है। कुछ दिन पहले ही Tokyo में Deaf-Olympics हुए हैं, जहाँ भारत ने अपना अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 20 medals जीते हैं। हमारी महिला खिलाड़ियों ने कबड्डी वर्ल्ड कप जीतकर इतिहास ही रच दिया।

– माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी

सत्यमेव जयते

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार